संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-22 अंक- 276
पृष्ठ 8
शुक्रवार
26 जून 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- नस पर नस चढ़ जाए...

विचार- सिख धर्म का अभिन्न अंग 'कृपाण'...

खेल- आकाश दीप ने शादी में धोनी...

सेना इंजीनियरी सेवा देश के डिफेंस इंफ्रास्ट्रक्चर की रीढ़ : राष्ट्रपति मुर्मु

नयी दिल्ली (एजेंसी)। भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने गुरुवार को राष्ट्रपति भवन में सेना इंजीनियरी सेवा (एमईएस) के वर्ष 2023 और 2024 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों से मुलाकात की। इस अवसर पर उन्होंने अधिकारियों को संबोधित करते हुए देश की रक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाने में सेना इंजीनियरी सेवा की महत्वपूर्ण भूमिका की सराहना की। राष्ट्रपति ने कहा कि सेना इंजीनियरी सेवा देश के डिफेंस इंफ्रास्ट्रक्चर की रीढ़ है। सामरिक महत्व के प्रतिष्ठानों के निर्माण और रखरखाव के माध्यम से यह सशस्त्र बलों की परिचालन क्षमताओं को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने कहा कि सेना इंजीनियरी सेवा के अधिकारियों का कौशल, समर्पण और कठोर परिश्रम यह सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है कि सैनिक, नौसैनिक और वायु सैनिक देश की रक्षा के अपने दायित्वों का प्रभावी ढंग से निर्वहन कर सकें। द्रौपदी मुर्मु ने युवा अधिकारियों से अपने कार्य में पेशेवर दृष्टिकोण, सत्यनिष्ठा, तकनीकी उत्कृष्टता और कर्तव्यनिष्ठा के उच्चतम मानकों को बनाए रखने का आग्रह किया। उन्होंने अधिकारियों को नवाचार को अपनाने और नई प्रौद्योगिकियों का अधिकतम उपयोग करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि अधिकारियों को अपने हाथ में ली जाने वाली प्रत्येक परियोजना में उत्कृष्टता हासिल करने का प्रयास करना चाहिए। राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा कि वर्तमान समय में, जब दुनिया विभिन्न संघर्षों और भू-राजनीतिक तनावों का सामना कर रही है, आत्मनिर्भरता राष्ट्रों के लिए एक रणनीतिक आवश्यकता बन गई है। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भर देश संकट की परिस्थितियों में अपनी आर्थिक स्थिरता बनाए रखने और विकास संबंधी प्राथमिकताओं को आगे बढ़ाने में अधिक सक्षम होता है। राष्ट्रपति ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान यह स्पष्ट रूप से देखने को मिला कि स्वदेशी रक्षा क्षमताएं, उन्नत प्रौद्योगिकी और मजबूत घरेलू औद्योगिक आधार किसी भी राष्ट्र की परिचालन तत्परता और रणनीतिक प्रभावशीलता को सशक्त बनाने में कितने महत्वपूर्ण होते हैं। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि सेना इंजीनियरी सेवा 'मेड इन इंडिया' उत्पादों को बढ़ावा देने और उनके उपयोग में सक्रिय भूमिका निभा रही है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा कि आज पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संबंधी अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। ऐसे समय में संधारणीय विकास केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। उन्होंने कहा कि अभियंता होने के नाते सेना इंजीनियरी सेवा के अधिकारियों की जिम्मेदारी है कि वे योजना निर्माण, निर्माण कार्यों और रखरखाव में पर्यावरण-अनुकूल तथा संधारणीय कार्य-पद्धतियों को बढ़ावा दें। राष्ट्रपति ने कहा कि अधिकारियों के प्रयास केवल सशक्त और सुरक्षित भारत के निर्माण तक सीमित नहीं होने चाहिए, बल्कि उन्हें स्वच्छ, हरित और संधारणीय भारत के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देना चाहिए।

अमेजन निवेश पर प्रधानमंत्री मोदी बोले-

युवाओं के लिए खुलेंगे नए मौके

नई दिल्ली,एजेंसी। अमेजन के रिकॉर्ड 48 अरब डॉलर के निवेश का स्वागत करते हुए, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि इससे पता चलता है कि दुनिया भर में भारत में निवेश करने में दिलचस्पी बढ़ रही है। यह बयान नई दिल्ली में प्रधानमंत्री मोदी और अमेजन के सीईओ एंडी जैसी के बीच हुई एक हाई-लेवल मीटिंग के बाद आया, जिसमें इस बड़ी टेक्नोलॉजी कंपनी ने घोषणा की कि वह 2026 और 2030 के बीच भारत में 48 अरब डॉलर की पूंजी लगाएगी। प्रधानमंत्री ने एक्स पर पोस्ट किया, मिस्टर एंडी जैसी के साथ बहुत अच्छी मीटिंग रही। मैं भारत में अमेजन के रिकॉर्ड 48 अरब डॉलर के निवेश का स्वागत करता हूँ। इससे हमारे युवाओं के लिए नए मौके बनेंगे। साथ ही, इससे पता चलता है कि दुनिया भर में भारत में निवेश करने में दिलचस्पी बढ़ रही है। प्रधानमंत्री का यह पोस्ट अमेजन के सीईओ एंडी जैसी के उस पोस्ट के जवाब में था, जिसमें उन्होंने कन्फर्म किया था कि अमेजन अगले पांच सालों में भारत में 48 अरब यूएसडी का निवेश करेगा। एंडी जैसी ने लिखा था कि प्रधानमंत्री मोदी के साथ भारत में अमेजन के भविष्य को लेकर हुई मीटिंग बहुत अच्छी रही। हम एक दशक से ज़्यादा समय से भारत में कस्टमर्स, सेलर्स, डेवलपर्स, स्टार्टअप्स और एंटरप्राइजेज को सर्विस दे रहे हैं और अभी तो बस शुरुआत ही हुई है। मैंने बताया कि हम अगले पांच सालों में 48 अरब डॉलर का निवेश कर रहे हैं, जिसमें एआई और क्लाउड इंफ्रास्ट्रक्चर में 21 अरब डॉलर से ज़्यादा का निवेश शामिल है। 2030 तक, हमारी योजना 38 लाख (3.8 मिलियन) नौकरियों को सपोर्ट करने, 80 अरब डॉलर के ई-कॉमर्स एक्सपोर्ट को बढ़ावा देने और 1.5 करोड़ (15 मिलियन) छोटे व्यवसायों और 40 लाख (4 मिलियन) सरकारी स्कूल के स्टूडेंट्स तक एआई के फायदे पहुँचाने की है।

किसान के बाद छात्र भी आतंकवादी: राहुल गांधी बोले, धर्मेन्द्र प्रधान माफी मांगें

नई दिल्ली,एजेंसी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने गुरुवार को केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान की कड़ी आलोचना करते हुए उन पर छात्रों का अपमान करने का आरोप लगाया और देश के युवाओं से माफी मांगने और इस्तीफा देने की मांग की। ग पर एक सोशल मीडिया पोस्ट में, गांधी ने दावा किया कि मोदी सरकार अहंकारी हो गई है और उन छात्रों को निशाना बना रही है जो अपने अधिकारों, निष्पक्ष परीक्षाओं और रोजगार के मौकों की मांग कर रहे हैं। उन्होंने लिखा कि सत्ता के अहंकार में डूबी मोदी सरकार अब उस मुकाम पर पहुँच गई है जहाँ शिक्षा मंत्री उन छात्रों को आतंकवादी कह रहे हैं, जो बस अपने अधिकारों, निष्पक्ष परीक्षाओं और सुरक्षित भविष्य की मांग कर रहे हैं।

गांधी ने परीक्षा के पेपर बार-बार लीक होने और शिक्षा व्यवस्था की नाकामियों जैसे मुद्दों पर जोर दिया, जिनका लाखों छात्रों के भविष्य पर बुरा असर पड़ा है। उन्होंने कहा कि जरा सोचिए दृ जिसकी नाकामियों की वजह से इतने सारे पेपर लीक हुए, जिसके शासन में 20 बच्चों की जान चली गई, जिसने लाखों युवाओं का भविष्य अंधेरे में धकेल दिया-वही आज परेशान बच्चों और आवाज उठाने वालों को आतंकवादी कह रहा है। लेकिन यह कोई नई बात नहीं है-देश का पेट भरने वाले किसानों को पेशेवर आंदोलनकारी और परजीवी कहा गया। सवाल पूछने वालों को देश-विरोधी करार दिया गया। और अब, युवाओं को आतंकवादी कहा जा रहा है।

पिछले विरोध-प्रदर्शनों का जिक्र करते हुए गांधी ने आरोप लगाया कि सरकार ने बार-बार आलोचकों और असहमति जताने वालों को अपमानजनक नामों से पुकारा है। उन्होंने कहा कि जो कोई भी सरकार से सवाल करता है, उसे देशद्रोही करार दे दिया जाता हैय बस यही उनकी पूरी राजनीति है। धर्मेंद्र प्रधान, आप तुरंत इस देश के लाखों युवाओं से माफी मांगें और अपनी नाकामियों के लिए इस्तीफा दें। जहाँ तक मेरी बात है, तो आप मुझ पर जितना चाहें उतना हमला कर सकते हैं। शिक्षा व्यवस्था पर अपनी आपत्तियों को दोहराते हुए गांधी ने कहा कि उन्होंने पहले भी कोटा में इस बारे में बात की थी और वे अपनी बात आगे भी उठाते रहेंगे। उन्होंने जोर देकर कहा कि मैंने कोटा में भी यही कहा था और आज फिर कह रहा हूँरू आज यह शिक्षा व्यवस्था सिर्फ वसूली का धंधा बन गई है। मैं इसे ऐसे ही नहीं चलने दूँगा। हर बच्चे को सस्ती और अच्छी शिक्षा मिले और परीक्षाएँ निष्पक्ष हों।

एनसीआर की सड़कों से हटेंगे 1.09 लाख पुराने बस और ट्रक

नयी दिल्ली,एजेंसी। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में प्रदूषण फैलाने वाले 1.09 लाख से अधिक पुराने ट्रक और बसें अब सड़कों से बाहर होंगी। हरियाणा सरकार ने बीएस-4 और उससे पुराने उत्सर्जन मानकों वाले व्यावसायिक वाहनों के प्रतिस्थापन की अधिसूचना जारी कर दी है। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की अध्यक्षता में 22 जून को हुई राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में लिए गए फैसले के बाद वीरवार को परिवहन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. राजा शेखर वुंडरू ने नोटिफिकेशन जारी किया है। नई व्यवस्था के तहत बीएस-3 और उससे पुराने ट्रक-बसों को अनिवार्य रूप से स्क्रैप करना होगा, जबकि बीएस-4 वाहनों को एनसीआर से बाहर संचालित करने अथवा दूसरे राज्यों में बेचने का विकल्प मिलेगा। इसके बदले नए बीएस-6, इलेक्ट्रिक और सीएनजी वाहनों की खरीद पर कर संबंधी रियायतें दी जाएंगी। सरकारी आंकड़ों के अनुसार नीति के दायरे में 93 हजार 458 ट्रक और 16 हजार 329 बसें आती हैं। यानी कुल 1 लाख 9 हजार 787 व्यावसायिक वाहनों को नई व्यवस्था के तहत बदला जाएगा। सरकार का मानना है कि पुराने डीजल वाहनों की संख्या घटने से एनसीआर में वायु प्रदूषण कम करने में मदद मिलेगी। अधिसूचना के अनुसार बीएस-3 और उससे पूर्व उत्सर्जन मानकों वाले वाहनों को अधिकृत वाहन स्क्रैपिंग केंद्रों पर भेजना होगा।

'समानता की शुरुआत कानून तक समान पहुंच से होती है', अंतरराष्ट्रीय कानूनी मंच पर बोले सीजेआई सूर्यकांत

नई दिल्ली,एजेंसी। भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा है कि समानता की दिशा में पहला कदम कानून तक समान पहुंच देना है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह केवल एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं होनी चाहिए। बुधवार को रूस में आयोजित 14वें सेंट पीटर्सबर्ग अंतरराष्ट्रीय कानूनी मंच में बोलते हुए मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि कानून तक समान पहुंच का फल खोखली वैधानिक घोषणाओं के बजाय वास्तविक अधिकारों के प्रावधान के रूप में मिलना चाहिए। हमें खुद से यह सवाल पूछना होगा कि कानून के समक्ष समानता को वास्तविक रूप देने के लिए वास्तव में क्या आवश्यक है? मेरा जवाब, जो मुझे दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे जटिल न्यायिक प्रणालियों की अध्यक्षता करने के अपने अनुभव से मिलता है। यह है कि समानता की दिशा में पहला कदम कानून तक समान पहुंच प्रदान करना है। मुख्य न्यायाधीश ने कहा, इस तरह की पहुंच महज एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं हो सकती है। खोखली वैधानिक घोषणाओं के बजाय वास्तविक अधिकारों के प्रावधान में परिणत होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि समानता का जन्मस्थान जरूरी नहीं कि 1215 का मैग्ना कार्टा ही हो। उन्होंने कहा, बल्कि, मेरा व्यक्तिगत मानना है कि इसकी जड़ें कौटिल्य के अर्थशास्त्र में निहित हैं, जो भारतीय उपमहाद्वीप से संबंधित है, जिसने चौथी शताब्दी में समानता के सिद्धांत को प्रतिपादित किया था।ट मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि भारतीय संविधान ने अपनी स्थापना के समय एक नए सवेरे का वादा किया और लोगों को मौलिक अधिकारों की एक श्रृंखला प्रदान की, जिसमें कानून के समक्ष समानता, गरिमापूर्ण जीवन और समान न्याय शामिल हैं। उन्होंने कहा, असली चुनौती इन गारंटियों को केवल सुनाना नहीं थी, बल्कि आर्थिक और सामाजिक कमियों, भाषा की बाधाओं और सांस्कृतिक विविधता की परवाह किए बिना, भौगोलिक दूरियों के पार इन्हें पहुंचाना था। मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि समानता के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा कानूनी या वैधानिक समर्थन की कमी नहीं है, बल्कि यह भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक असमानताओं के कारण प्रकट होती है। उन्होंने कहा, श्भारतीय संवैधानिक न्यायालयों ने संवैधानिक गारंटियों की व्यापक और विस्तृत व्याख्या की है ताकि ऐसी सभी बाधाओं को दूर किया जा सके। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि कानून और न्याय तक पहुंच केवल एक तकनीकी सुविधा नहीं बल्कि शासन का एक गैर-भेदभावपूर्ण मूलभूत सिद्धांत है। मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि समान न्याय और समान कानून केवल औपचारिक वाक्यांश नहीं हैं, बल्कि ये वे शर्तें हैं जिनके तहत कोई कानूनी व्यवस्था खुद को कानून कह सकती है। अंतरराष्ट्रीय कानूनी ढांचे के संबंध में, मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि वैश्विक पूर्व और दक्षिण के कई राष्ट्र अभी भी अपनी संस्थाओं का निर्माण कर रहे हैं, उपनिवेशवाद के परिणामों को संबोधित कर रहे हैं और गरीबी से निपट रहे हैं। मुख्य न्यायाधीश ने कहा, इन देशों को अक्सर ऐसी जांच और दबाव का सामना करना पड़ता है जो धनी और अधिक प्रभावशाली राज्यों पर आनुपातिक रूप से लागू नहीं होता है, जिनके स्वयं के अनुपालन रिकॉर्ड भी जरूरी नहीं कि त्रुटिहीन हों।

आप सांसद संजय सिंह का बड़ा दावा: राम मंदिर जमीन घोटाले के सबूत एसआईटी को सौंपेंगे

नई दिल्ली,एजेंसी। आम आदमी पार्टी के सांसद संजय सिंह ने कहा है कि उनके पास अयोध्या राम मंदिर से जुड़े कथित जमीन घोटाले के सबूत हैं और वे चंदे में हेराफेरी के मामले की जांच कर रही स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम को ये दस्तावेज सौंपने की योजना बना रहे हैं। गुरुवार को बोलते हुए सिंह ने कहा कि मेरे पास जमीन घोटाले से जुड़े कई सबूत हैं और मैं वे सभी दस्तावेज एसआईटी के सामने पेश करूँगा। अब तक कोई कार्रवाई क्यों नहीं की गई? अब तक कार्रवाई हो जानी चाहिए थी। एसआईटी को लिखे एक पत्र में, सिंह ने कहा कि कथित गबन से लाखों भक्तों की आस्था को ठेस पहुँची है। उन्होंने लिखा कि मैं आपका ध्यान इस बात की ओर दिलाना चाहता हूँ कि अयोध्या में भगवान श्री राम मंदिर का प्रबंधन करने वाले ट्रस्ट द्वारा किए गए घोटालों से देश भर के करोड़ों हिंदुओं की आस्था को गहरी चोट पहुँची है। हाल ही में, दान पेटी से करोड़ों रुपये की चोरी के मामले में ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय, अनिल मिश्रा, गोपाल राव, टिन्नू यादव और अन्य लोगों के नाम सामने आए हैं। यह चोरी का कोई मामूली मामला नहीं हैय इससे पहले भी भगवान श्री राम के नाम पर खरीदी गई जमीन को लेकर करोड़ों का घोटाला हो चुका है दृ जिसके सबूत मैंने पहले प्रशासन और मीडिया के सामने पेश किए थे, फिर भी सरकार ने कोई कार्रवाई नहीं की। सिंह ने श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के सदस्यों पर जमीन की खरीद में भ्रष्टाचार का आरोप लगाया। उन्होंने आरोप लगाया कि 2021 में, ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने सुल्तान अंसारी और रवि मोहन तिवारी से 2 करोड़ रुपये की कीमत वाली जमीन 18.5 करोड़ रुपये में खरीदी। मैंने अयोध्या कोतवाली पुलिस स्टेशन में इस बारे में शिकायत दर्ज कराई थी, लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है।

रविशंकर प्रसाद बोले, इंदिरा गांधी ने कुर्सी बचाने को लगाई थी आपातकाल

नई दिल्ली,एजेंसी। गुरुवार को भाजपा सांसद रविशंकर प्रसाद ने कहा कि 1975 में लगाई गई इमरजेंसी का मकसद सिर्फ तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी

की कुर्सी बचाना था। भारत के लोकतांत्रिक इतिहास के सबसे विवादित दौर में से एक के 50 साल पूरे होने पर उन्होंने यह बात कही। राष्ट्रीय राजधानी में मीडिया से बात करते हुए प्रसाद ने कहा कि यह मौका इमरजेंसी के दौरान हुई घटनाओं की याद दिलाता है। उन्होंने कांग्रेस पर राजनीतिक अस्तित्व बचाने के लिए लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि इमरजेंसी के 50 साल पूरे हो गए हैं। आज लोग देश में लोकतंत्र बचाने की बात करते हैं और संविधान दिखाते हैं। आज, इन 50 सालों में, उनके असली चेहरे को बेनकाब करना जरूरी है कि 50 साल पहले क्या हुआ था। मैं जेपी आंदोलन का एक सिपाही था। मुझे इमरजेंसी के दौरान लड़ने का सौभाग्य भी मिला। इंदिरा गांधी का चुनाव रद्द कर दिया गया था। वह सुप्रीम कोर्ट गईं लेकिन उन्हें रोक नहीं मिलीय कहा गया कि आप सदन में आ सकती हैं लेकिन बोल नहीं पाएंगी। इंदिरा गांधी को बचाने की कोशिश में इमरजेंसी का गलत इस्तेमाल किया गया। इमरजेंसी सिर्फ इंदिरा गांधी की कुर्सी बचाने के लिए लगाई गई थी। इससे पहले, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने 25 जून, 1975 को लगाए गए आपातकाल को भारतीय लोकतंत्र के इतिहास का सबसे काला अध्याय बताया और कहा कि इसने लोकतांत्रिक संस्थाओं और संवैधानिक मूल्यों को गहरा आघात पहुँचाया।

इमरजेंसी पर संजय राउत का भाजपा-शिंदे गुट पर तीखा हमला, बोले- इंदिरा गांधी ने पार्टी नहीं तोड़ी थी

मुंबई,एजेंसी। शिवसेना (यूबीटी) के सांसद संजय राउत ने गुरुवार को एकनाथ शिंदे की अगुवाई वाली शिवसेना और भाजपा पर तंज कसा। यह तंज तब कसा गया जब एनसीईआरटी ने 9वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक में 1975 की इमरजेंसी पर एक टॉपिक शामिल किया। राउत ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने कोई पार्टी नहीं तोड़ी थी। 'पार्टी तोड़ने' का यह तंज तब आया जब यूबीटी सेना के नौ लोकसभा सांसदों में से छह सांसद शिवसेना में शामिल हो गए। मुंबई में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए राउत ने दावा किया कि देश पिछले 12 सालों से इमरजेंसी जैसे हालात से गुजर रहा है। 1975 की इमरजेंसी का बचाव करते हुए उन्होंने कहा कि संविधान में इसका प्रावधान है। उन्होंने कहा, 'इस देश में पिछले 12 सालों से इमरजेंसी जैसे हालात हैं। इंदिरा गांधी ने कोई राजनीतिक पार्टी नहीं तोड़ी और न ही संविधान को खत्म किया। इमरजेंसी सिर्फ पढ़ाई का विषय नहीं है, बल्कि संविधान में भी इसका प्रावधान है। संविधान में देश में अराजकता फैलने की स्थिति में इमरजेंसी का प्रावधान है। इसका मतलब यह नहीं है कि आपको संविधान का सम्मान नहीं करना चाहिए। मैं पूछना चाहता हूं कि नोटबंदी क्यों लागू की गई? कोविड-19 महामारी के दौरान सख्त पाबंदियां और इमरजेंसी जैसे उपाय क्यों किए गए? बालासाहेब ठाकरे ने इमरजेंसी का समर्थन किया था। अगर कोई कहे कि सरकार के आदेश न मानें या सेना से पीएम मोदी के खिलाफ बगावत करने को कहे, तो आप क्या करेंगे? इस बीच, एनसीईआरटी ने कक्षा 9 की पाठ्यपुस्तक में इस विषय को शामिल किया है और इसे बड़ी चुनौतियों में से एक के रूप में पेश किया है, क्योंकि उस समय ज़्यादातर मौलिक अधिकार निलंबित कर दिए गए थे। इसका जिक्र नई बनी सोशल साइंस की पाठ्यपुस्तक अंडरस्टैंडिंग सोसाइटी : इंडिया एंड बियॉन्ड में मिलता है, जिसमें भारतीय लोकतंत्र की खूबियों और चुनौतियों पर चर्चा करने वाले एक अध्याय में इमरजेंसी को शामिल किया गया है। राजस्थान कांग्रेस के विधायक सचिन पायलट ने भी इस कदम की आलोचना की और इसे बीजेपी सरकार द्वारा इतिहास बदलने की कोशिश बताया।

25 कोचिंग संस्थानों में जांच, 10 को नोटिस

प्रयागराज। लखनऊ में कोचिंग संस्थान में आग की घटना के बाद अग्निशमन विभाग और जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय की ओर से बुधवार को अलग–अलग चेकिंग अभियान चलाया गया। अग्निशमन विभाग ने जिले के 25 कोचिंग संस्थानों का फायर ऑडिट कराया। इनमें से 10 संस्थानों में खामियां मिलीं। इन्हें नोटिस देकर सात दिन में व्यवस्था में सुधार लाने के लिए कहा गया है। मुख्य अग्निशमन अधिकारी चंद्र मोहन शर्मा ने बताया कि जिन संस्थानों में जांच की गई, उनमें संकरे रास्ते, अपर्याप्त निकास द्वार और अग्निशमन उपकरणों के रखरखाव की समस्या सामने आई। जिन जगहों पर खामियां मिलीं, वहां जल्द दूर करने के निर्देश दिए गए। व्यवस्था में सुधार नहीं हुआ तो कार्रवाई की जाएगी।

अपंजीकृत कोचिंग के खिलाफ भी अभियान

उधर, बिना पंजीकरण संचालित कोचिंग संस्थानों के खिलाफ भी अभियान शुरू हो गया है। जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय की ओर से जांच के लिए आठ टीम गठित की गईं। पहले दिन सात कोचिंग संस्थान बिना पंजीकरण संचालित पाए गए। सभी को तीन दिन के भीतर स्पष्टीकरण देने और सात दिन के भीतर पंजीकरण कराने की चेतावनी दी गई है।

डीआईओएस डॉ. संतोष कुमार राय ने बताया कि टीमें जिलेभर में कोचिंग संस्थानों का स्थलीय निरीक्षण करेंगी। इस दौरान उत्तर प्रदेश कोचिंग विनियमन अधिनियम–2002 व शासनादेशों के अनुपालन, पंजीकरण, सुरक्षा मानकों, आधारभूत सुविधाओं, बिजली एवं अग्निशमन व्यवस्थाओं की जांच की जाएगी।

ये संस्थान बिना पंजीकरण संचाचित

जिन सात कोचिंग संस्थानों में पंजीकरण नहीं मिला उनमें सिविल लाइंस स्थित लॉ प्रेप ट्यूटोरियल, एसके शुक्ला एकेडमी, नेक्स्ट आईएएस, नोटबुक आईएएस, स्टडी आईक्यू, एक्सपर्ट इंस्टीट्यूट और ज्ञान गंगा कोचिंग शामिल हैं।

लोकरंग बहार कार्यक्रम में बिखरे लोक संस्कृति के रंग

प्रयागराज। सांस्कृतिक संस्था आस्था समिति और रानी रेवती देवी सरस्वती विद्या निकेतन इंटर कॉलेज ने बुधवार को लोकरंग बहार कार्यक्रम का आयोजन किया। विद्यालय के प्रेक्षागृह में लोक नृत्यांगना बीना सिंह ने मनोहारी नृत्य से इसकी शुरुआत की। लोक गायिका कृति श्रीवास्तव और प्रिया मेहंदी ने देवी गीत प्रस्तुत किए। ऐश्वर्या श्रीवास्तव ने लोक भक्ति और लोक संवेदना का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया। कीर्ति चौधरी ने सावन के गीत गाकर दर्शकों का मन मोहा। ज्योति आनंद, युवा लोक गायिका शिखा त्रिपाठी ने लोकप्रिय गीत पेश किए। बीना सिंह और समूह ने ढेढ़िया नृत्य, राजस्थानी नृत्य और मयूर नृत्य प्रस्तुत किए। इस अवसर पर न्यायमूर्ति विजय लक्ष्मी, महापौर गणेश चंद केसरवानी और उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक सुदेश शर्मा, कॉलेज के प्रधानाचार्य सतीश कुमार सिंह, प्रबंधक राकेश सिंह सेंगर और संस्था के महासचिव मनोज कुमार गुप्ता मौजूद रहे। कार्यक्रम संयोजक पंकज गौड़ ने बताया कि इसका उद्देश्य युवा पीढ़ी को सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ना है। अध्यक्ष बृजराज तिवारी और कोषाध्यक्ष अनूप केसरवानी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

राजकीय महाविद्यालय गुनई गहरपुर का संचालन विवादों में, छात्र परेशान

प्रयागराज। ग्रामीण छात्रों को उच्च शिक्षा देने के लिए सत्र 2023–24 में राजकीय महाविद्यालय गुनई गहरपुर मेजा की शुरुआत छह विद्यार्थियों से हुई थी। इसके संचालन की जिम्मेदारी प्रो. राजेंद्र सिंह राज्य विश्वविद्यालय को सौंपी गई थी, लेकिन पठन–पाठन शुरू नहीं हो सका। नए सत्र जुलाई से इसका संचालन होगा या नहीं, यह तय नहीं है। राज्य विश्वविद्यालय ने स्पष्ट रूप से संचालन करने से मना कर दिया है। उधर, उच्च शिक्षा निदेशालय केवल तैयारी करने का दावा कर रहा है। राज्य विश्वविद्यालय को इसे अपने संसाधनों से संघटक महाविद्यालय के रूप में चलाना था। सरकार ने बीच में महाविद्यालय का संचालन अपने स्तर पर करने का निर्णय लिया था। शिक्षकों की नियुक्ति भी की गई, लेकिन कुछ दिन बाद यह निर्णय वापस ले लिया गया। अब राज्य विश्वविद्यालय भी इसे चलाने के लिए तैयार नहीं है। उच्च शिक्षा निदेशालय और विश्वविद्यालय एक–दूसरे पर सवाल उठा रहे हैं। सत्र 2023–24 में यह महाविद्यालय छह विद्यार्थियों से शुरू हुआ था। सत्र 2025–26 तक छात्रों की संख्या 31 हो गई। हालांकि, महाविद्यालय में किसी भी शिक्षक की तैनाती नहीं हुई। उच्च शिक्षा निदेशालय ने नियुक्त शिक्षकों को वापस बुला लिया। करोड़ों रुपये की लागत से बना यह महाविद्यालय अब किसी काम का नहीं रह गया है। महाविद्यालय के विज्ञान संकाय की प्रयोगशाला में उपकरण धूल फांक रहे हैं। कुर्सियां भी बैठने लायक नहीं हैं और कई उपकरण खराब हो चुके हैं। महाविद्यालय में बीए, बीएससी और बीकॉम की कुल 540 सीटें हैं। इनमें बीए की 180, बीएससी की 240 और कॉमर्स की 120 सीटें शामिल हैं। कुलपति अखिलेश कुमार सिंह ने सरकार से संचालन अपने स्तर पर कराने का आग्रह किया है। सहायक निदेशक बीएल शर्मा ने कहा कि जल्द ही कोई निर्णय लिया जाएगा।

250 किमी दूर बना दिया केंद्र, अभ्यर्थी परेशान

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश शिक्षा चयन आयोग ने मंडल के बाहर परीक्षा केंद्र नहीं बनाने का दावा किया था। इसके बावजूद उप्र शिक्षक पात्रता परीक्षा (यूपीटीईटी) के कई अभ्यर्थियों के केंद्र 250 से 300 किमी दूर भेज दिए गए हैं। इससे अभ्यर्थी परेशान हैं। दो, तीन और चार जुलाई को रोज दो पालियों में परीक्षा होगी। प्रथम की सुबह 9.30 से दोपहर 2.30 तो द्वितीय पाली की परीक्षा दोपहर 2.30 से शाम 05 बजे तक चलेगी। प्रदेश के 60 जिलों में 955 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। देवरिया में 23283 अभ्यर्थी हैं। इसमें 9784 को कुशीनगर, 4232 को करीब 100 किमी दूर आजमगढ़, 2668 को 250 किमी दूर वाराणसी व अन्य को गाजीपुर, बस्ती भेज दिया गया है। बस्ती की दूरी करीब 125 किमी है। मंडल मुख्यालय से 55 किमी दूर गोरखपुर भेजा जा सकता था। 383 दिव्यांग अभ्यर्थियों का केंद्र जिले में भी रखा गया है। प्रयागराज में 62935 अभ्यर्थियों हैं। इन्हें प्रतापगढ़, जौनपुर, मिर्जापुर और वाराणसी केंद्र भेजा गया है, जबकि वाराणसी की जगह भदोही भेजा जा सकता था। उप्र बीटीसी शिक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष अनिल यादव ने इस पर आपत्ति जताई है। उन्होंने कहा कि इससे अभ्यर्थियों का समय और धन दोनों की बर्बादी होगी। आयोग के उप सचिव संजय सिंह ने बताया कि आसपास के जिलों का ही निर्धारण किया गया है। देवरिया के केवल 2668 अभ्यर्थियों को वाराणसी भेजा गया है। बाकी को अगल–बगल के जिलों में ही केंद्र मिले हैं। महिलाओं को पड़ोस के जिलों में केंद्र दिए गए हैं।

जहां बंद थे भविष्य के मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री, नैनी जेल में रखे गए थे करीब 700 राजनीतिक बंदी

प्रयागराज। 25 जून 1975 की आधी रात देश के लोकतांत्रिक इतिहास का एक ऐसा अध्याय शुरू हुआ, जिसे लोग आपातकाल के नाम से याद करते हैं। उस रात देशभर में हजारों विपक्षी नेताओं, कार्यकर्ताओं और छात्र नेताओं को गिरफ्तार किया गया था।

25 जून 1975 की आधी रात देश के लोकतांत्रिक इतिहास का एक ऐसा अध्याय शुरू हुआ, जिसे लोग आपातकाल के नाम से याद करते हैं। उस रात देशभर में हजारों विपक्षी नेताओं, कार्यकर्ताओं और छात्र नेताओं को गिरफ्तार किया गया था। उन्हीं में एक थे इविवि के 25 वर्षीय एलएलबी छात्र व तत्कालीन संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी (संसोपा) के युवा नेता केके श्रीवास्तव। इन्हें 30 जून 1975 की रात घर से पुलिस ने उठाकर जेल भेज दिया। केके श्रीवास्तव बताते हैं कि नैनी सेंट्रल जेल का सर्किल–तीन राजनीतिक बंदियों का बड़ा केंद्र बन गई थी। यहां करीब 700 राजनीतिक बंदियों को रखा गया था। इन्हीं में आज के रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, पूर्व मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी, प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री राम नरेश यादव और पूर्व केंद्रीय मंत्री जनेश्वर मिश्र शामिल थे।

जेल में तीन मेस चलती थीं। एक का संचालन इविवि के तत्कालीन प्रोफेसर डॉ. मुरली मनोहर जोशी करते थे। दूसरी की जिम्मेदारी इविवि के तत्कालीन प्रोफेसर डॉ. सत्यव्रत सिन्हा और बाबा रामधारी यादव के पास थी। तीसरी मेस की व्यवस्था युवा कार्यकर्ता संभालते थे। दिन में भोजन और चर्चाओं के बाद शाम को जेल परिसर खेल के मैदान में बदल जाता था। कोई कबड्डी खेलता, कोई वॉलीबॉल, कोई शतरंज और कोई ताश। राजनाथ सिंह और जनेश्वर मिश्र अक्सर बैडमिंटन खेलते दिखाई देते थे, जबकि डॉ. मुरली मनोहर जोशी और राम नरेश यादव ताश और शतरंज में समय बिताते थे।

शाम छह बजे लग जाता था ताला, लाउडस्पीकर से मिलती थी दुनिया की खबर

समाजवादी पार्टी उत्तर प्रदेश मुख्यालय के निर्वाचन प्रमुख श्रीवास्तव कहते हैं कि शाम छह बजे गिनती के बाद बैरकों में ताला बंद हो जाता था। बाहरी दुनिया से संपर्क लगभग खत्म था। समाचार सुनने का एकमात्र साधन था जेल परिसर में लगा एक लाउडस्पीकर, जो जेल अधीक्षक के कमरे में रखे रेडियो से जुड़ा था। शाम सात और रात आठ बजे सभी बंदी उसी लाउडस्पीकर के नीचे खड़े होकर समाचार सुनते थे। जेल में उस समय का अखबार 'भारत' आता था, लेकिन अखबारों और प्रसारण माध्यमों पर सेंसरशिप लागू थी। दूरदर्शन पर लगातार इंदिरा गांधी की तस्वीरों और एकपक्षीय खबरों का प्रसारण होता था।

एक चिट्ठी की इजाजत, रिश्तेदारों से मिलने पर रोक

श्रीवास्तव बताते हैं कि जेल की सबसे बड़ी यातना शारीरिक नहीं, मानसिक थी। 19 महीनों तक कोई रिश्तेदार या परिचित उनसे मिलने नहीं आ सका। महीने में केवल एक पत्र मिलने की अनुमति थी और वह भी जेल प्रशासन की जांच के बाद। यदि किसी पत्र में प्रशासन को आपत्तिजनक सामग्री लगती, तो उस हिस्से पर स्याही फेर दी जाती थी।

प्रोफेसर पर बिजली का तार काटने का आरोप

केके श्रीवास्तव ने बताया कि जेल में इविवि के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. रघुवंश भी थे। पोलियो के कारण उनका हाथ और पैर प्रभावित था। वे अंगूठे में कलम फंसाकर लिखते थे। बावजूद इसके उन पर बिजली के खंभे पर चढ़कर तार काटने का आरोप लगाया गया था।

जेल से बाहर निकलना लगा दूसरा जन्म

उन्होंने बताया कि सात जनवरी 1977 को राजनीतिक बंदियों की रिहाई शुरू हुई। 19 महीने बाद जब जेल के दरवाजे खुले, तो उन्हें ऐसा लगा जैसे नया जीवन मिल गया हो। इसके कुछ ही महीनों बाद हुए आम चुनाव में इंदिरा गांधी और कांग्रेस को हार का सामना करना पड़ा तथा मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार बनी।

लोकतंत्र की कीमत का एहसास

आपातकाल के उस दौर को याद करते हुए श्रीवास्तव कहते हैं कि जेल में बंद हर व्यक्ति लोकतंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का महत्व समझ गया था। आज जब वे पीछे मुड़कर देखते हैं तो उन्हें सिर्फ अपनी गिरफ्तारी नहीं, बल्कि वह पूरा दौर याद आता है, जब एक पूरी पीढ़ी ने लोकतंत्र की रक्षा के लिए अपनी आजादी दांव पर लगा दी थी।

अखबार तो दूर, चिट्ठी लिखने की भी नहीं थी इजाजत

आपातकाल के दिनों की यादें साझा करते एजी ब्रदरहुड कर्मचारी संघ के पूर्व अध्यक्ष कृपाशंकर श्रीवास्तव बताते हैं कि जेल में अखबार नहीं मिलता था। परिवार को चिट्ठी लिखने तक की इजाजत नहीं थी। घर–परिवार और देश दुनिया के खबरों से दूर जेल में लगभग दो साल बिताए।

25 जून 1975 की रात करीब तीन बजे रामबाग स्थित उनके आवास पर तत्कालीन पुलिस कप्तान मैनेजर पांडेय एक ट्रक पीएसी के जवानों को लेकर पहुंचे थे। पूरी गली को छावनी में तब्दील कर दिया गया था। मुझे गिरफ्तार करके कोतवाली ले जाया गया, जहां डॉ. मुरली मनोहर जोशी, जनेश्वर मिश्र, बाबा राम आधार यादव और सत्य प्रकाश मालवीय पहले से मौजूद थे। रात भर वहां रखने के बाद अगले दिन सभी लोगों को नैनी जेल के जवाहरलाल नेहरू बैरक में बंद कर दिया गया। दोपहर में राजनाथ सिंह और मुलायम सिंह यादव को भी लाया गया। चार महीने बाद उन्हें भोपाल केंद्रीय जेल भेज दिया गया, जहां अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवानी, चंद्रशेखर मौजूद थे।

लखनऊ अग्निकांड के बाद बिजली विभाग का आठ कोचिंग संस्थानों को नोटिस

प्रयागराज। लखनऊ में हुए अग्निकांड के बाद बुधवार को बिजली विभाग ने आठ कोचिंग संस्थाओं को नोटिस जारी कर आवश्यक सुधार करने के निर्देश दिए। जांच के दौरान कई संस्थानों में सुरक्षा मानकों में खामियां पाई गईं।

लखनऊ में हुए अग्निकांड के बाद बुधवार को बिजली विभाग ने आठ कोचिंग संस्थाओं को नोटिस जारी कर आवश्यक सुधार करने के निर्देश दिए। जांच के दौरान कई संस्थानों में सुरक्षा मानकों में खामियां पाई गईं। कुछ संस्थानों के पास वैध एनओसी नहीं मिली। कई स्थानों पर अर्थिंग, बिजली पैनलों की साफ–सफाई तथा अन्य सुरक्षा व्यवस्थाएं निर्धारित मानकों के अनुरूप नहीं पाई गईं। अभियान में एसडीओ म्योहाल अतुल कुमार, जेई म्योहाल बलविंदर सिंह, बिजली सुरक्षा निदेशालय के सहायक निदेशक उपेंद्र सिंह की टीम शामिल रही।

25 कोचिंग संस्थानों में जांच, 10 को नोटिस

लखनऊ में कोचिंग संस्थान में आग की घटना के बाद अग्निशमन विभाग और जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय की ओर से बुधवार को अलग–अलग चेकिंग अभियान चलाया गया। अग्निशमन विभाग ने जिले के 25 कोचिंग संस्थानों का फायर ऑडिट कराया। इनमें से 10 संस्थानों में खामियां मिलीं। इन्हें नोटिस देकर सात दिन में व्यवस्था में सुधार लाने के लिए कहा गया है।

मुख्य अग्निशमन अधिकारी चंद्र मोहन शर्मा ने बताया कि जिन संस्थानों में जांच की गई, उनमें संकरे रास्ते, अपर्याप्त निकास द्वार और अग्निशमन उपकरणों के रखरखाव की समस्या सामने आई। जिन जगहों पर खामियां मिलीं, वहां जल्द दूर करने के निर्देश दिए गए। व्यवस्था में सुधार नहीं हुआ तो कार्रवाई की जाएगी।

अपंजीकृत कोचिंग के खिलाफ भी अभियान

उधर, बिना पंजीकरण संचालित कोचिंग संस्थानों के खिलाफ भी अभियान शुरू हो गया है। जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय की ओर से जांच के लिए आठ टीम गठित की गईं। पहले दिन सात कोचिंग संस्थान बिना पंजीकरण संचालित पाए गए। सभी को तीन दिन के भीतर स्पष्टीकरण देने और सात दिन के भीतर पंजीकरण कराने की चेतावनी दी गई है। डीआईओएस डॉ. संतोष कुमार राय ने बताया कि टीमें जिलेभर में कोचिंग संस्थानों का स्थलीय निरीक्षण करेंगी। इस दौरान उत्तर प्रदेश कोचिंग विनियमन अधिनियम–2002 व शासनादेशों के अनुपालन, पंजीकरण, सुरक्षा मानकों, आधारभूत सुविधाओं, बिजली एवं अग्निशमन व्यवस्थाओं की जांच की जाएगी।

ये संस्थान बिना पंजीकरण संचाचित

जिन सात कोचिंग संस्थानों में पंजीकरण नहीं मिला उनमें सिविल लाइंस स्थित लॉ प्रेप ट्यूटोरियल, एसके शुक्ला एकेडमी, नेक्स्ट आईएएस, नोटबुक आईएएस, स्टडी आईक्यू, एक्सपर्ट इंस्टीट्यूट और ज्ञान गंगा कोचिंग शामिल हैं।

प्रयागराज मंडल में अब तक 12 संस्थान सील

प्रयागराज। लखनऊ में हुए अग्निकांड के बाद प्रयागराज मंडल में अग्नि सुरक्षा व अन्य मानकों को पूरा न करने पर 10 संस्थानों को सील किया जा चुका है। मंडलायुक्त सौम्या अग्रवाल के निर्देश पर प्रयागराज मंडल के सभी जनपदों में विशेष जांच व प्रवर्तन अभियान संचालित किया जा रहा है।

निरीक्षण के दौरान यह भी पाया गया कि अनेक संस्थान स्वीकृत भू–उपयोग और भवन मानचित्र के विपरीत संचालित हो रहे थे। कई संस्थानों में निर्धारित क्षमता से अधिक विद्यार्थियों को बैठाया जा रहा था, जिससे आपात स्थिति में भगदड़ जैसी घटनाओं की आशंका बनी रहती है। इसे देखते हुए प्रयागराज जिले में छह और कौशाम्बी में छह संस्थान सील किए गए हैं।

स्कूल के कमरे में फंदे में लटका मिला मजदूर का शव, हत्या की आशंका

प्रयागराज। नवाबगंज थाना क्षेत्र के सरांय जयराम गांव के एक स्कूल के कमरे में मजदूर का शव मिलने पर सनसनी फैल गई। मौके पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे लेकर पोस्टमार्टम भेज दिया। नवाबगंज थाना क्षेत्र के सरांय जयराम गांव के एक स्कूल के कमरे में मजदूर का शव मिलने पर सनसनी फैल गई। मौके पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे लेकर पोस्टमार्टम भेज दिया। धर्मवीर पुत्र लाल बहादुर निवासी पटियाली थाना पटियाली जनपद इटावा अपने ससुराल थाना नवाबगंज के सराय जयराम में बीते कई साल से रहकर स्थानीय एक भट्टे पर मजदूरी का काम करता रहा। बताया गया कि बीती रात वह अचानक घर से गायब हो गया। जिसका शव गांव के एक निजी शिक्षण संस्थान के कमरे में छत में लटका हुआ मिला। घटना की जानकारी मिलने पर पुलिस के अलावा फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुंची जांच पड़ताल कर वापस चली गई। मृतक की पत्नी पूजा की शरीर पर पुलिस विधिक कार्रवाई की शव को पोस्टमार्टमभेज दिया। पूजा के मुताबिक उसकी शादी विगत पाच साल पहले परिजन की राजामंदी से धर्मवीर से हुई थी। मृतक की पत्नी पूजा ने बताया कि वह करीब 9रू00 बजे रात घर से निकले थे फिर वापस नहीं लौटे सुबह काफी देर तलाश के बाद उनका शव स्कूल के कमरे में लटका हुआ मिला। हालांकि घटनाक्रम को लेकर तरह–तरह के सवाल सामने आ रहे हैं। प्रत्यक्षदर्शीयों के मुताबिक हत्या या खुदकुशी को लेकर सवाल उठ रहे हैं। लोगों ने बताया कि मृतक पैर जमीन पर टिका हुआ था और फंदे में लटका हुआ मिला।

प्रयागराज में 86 गेस्ट हाउस, होटल, बैंक्वेट हॉल का रजिस्ट्रेशन निरस्त, संचालन पर रोक

प्रयागराज। जिले में अग्नि सुरक्षा मानकों की अनदेखी करने वाले 86 गेस्ट हाउस, बैंक्वेट हॉल, होटल और लॉज का रजिस्ट्रेशन निरस्त करते हुए जिला प्रशासन ने इनके संचालन पर रोक लगा दी है। जिले में अग्नि सुरक्षा मानकों की अनदेखी करने वाले 86 गेस्ट हाउस, बैंक्वेट हॉल, होटल और लॉज का रजिस्ट्रेशन निरस्त करते हुए जिला प्रशासन ने इनके संचालन पर रोक लगा दी है। यह कार्रवाई जनहित में अग्नि सुरक्षा और जीवन रक्षा के मद्देनजर की गई है।

मुख्य अग्निशमन अधिकारी की रिपोर्ट के आधार पर अपर जिलाधिकारी (नगर) सत्यम मिश्र ने इन प्रतिष्ठानों के सराय एक्ट के तहत रजिस्ट्रेशन निरस्त कर संचालन पर रोक लगाने का आदेश दिया है। मुख्य अग्निशमन अधिकारी ने आख्या में बताया था कि इन प्रतिष्ठानों के प्रोपराइटर या प्रबंधकों ने संचालन के लिए आवश्यक अग्नि सुरक्षा प्रमाणपत्र प्राप्त नहीं किए हैं। ऐसे में इनका संचालन अग्नि सुरक्षा के लिहाज से खतरनाक है। इससे लोगों की जान को खतरा हो सकता है। प्रशासन ने जिन संस्थानों के रजिस्ट्रेशन निरस्त करते हुए उनके संचालन पर रोक लगाई है उनमें शहर के साथ ग्रामीण क्षेत्र के भी कई होटल, विवाह घर शामिल हैं। शहर में चाहचंद थाना कोतवाली स्थित दिगंबर जैन पंचायती सभा जैन धर्मशाला, बलरामपुर हाउस में टेंपटेशन, जॉर्जटाउन में पंखुड़ी गार्डन, महात्मा गांधी मार्ग पर हाईकोर्ट के सामने प्लेटिनम इन गेस्ट हाउस समेत कई होटल व गेस्ट हाउस शामिल हैं।

कुंडा विधायक राजाभैया पिता उदय प्रताप समेत भदरी किले में नजरबंद, 13 समर्थक भी हाउस अरेस्ट

प्रयागराज। मोहर्म पर शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिला प्रशासन ने लोकतांत्रिक जनसत्ता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष और कुंडा विधायक राजाभैया को हाउस अरेस्ट कर लिया है। कुंडा स्थित भदरी किले में उनके पिता उदय प्रताप सिंह को भी नजर बंद कर दिया गया है। साथ ही 13 समर्थकों पर भी घर से बाहर निकलने पर पाबंदी लगा दी गई है। इस संबंध में किले के गेट पर नोटिस चस्पा कर दिया गया है। किला पुलिस छावनी में तब्दील हो गया है। जिला प्रशासन ने मोहर्रम के दौरान सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने के लिए कुंडा विधायक रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया को उनके पिता राजा उदय प्रताप सिंह व 13 समर्थकों के साथ हाउस अरेस्ट (नजरबंद) किया है। यह एहतियाती कदम भदरी कोठी के बाहर भारी पुलिस बल की तैनाती के साथ उठाया गया। पुलिस सूत्रों की माने तो कुंडा के शेखपुर में वर्ष 2012 में एक बंदर की मौत के बाद ग्रामीणों ने सड़क किनारे एक हनुमान मंदिर का निर्माण किया था। राजा उदय प्रताप सिंह इसी मंदिर में हर वर्ष मोहर्रम के दिन हनुमान पाठ और भंडारे का आयोजन करते हैं। तनाव की आशंका को देखते हुए प्रशासन ने हाउस अरेस्ट की कार्रवाई की है। वर्ष 2013–14 में जुलूस और भंडारा साथ आयोजित होने पर स्थिति बिगड़ गई थी। राजा भैया के आवास के बाहर पुलिस ने हाउस अरेस्ट की नोटिस चस्पा की है। समर्थकों में निर्भय सिंह बेंती, जुगनू विश्वकर्मा हथिगवां, हनुमान पांडेय कुंडा, जीतेंद्र यादव, आनंद पाल, रमाकांत मिश्रा, भवानी विश्वकर्मा, रवि सिंह, केशरी नंदन पांडेय, जमुना प्रसाद मौर्य, गया प्रयास प्रजापति, मोहन हथिगवां शामिल हैं। सीओ कुंडा शिव नारायण वैस ने बताया कि हाउस अरेस्ट किए गए लोगों के घर पर नोटिस चस्पा कर दी गई। पुलिस फोर्स की तैनाती भी की गई है। शुक्रवार की रात नौ बजे हाउस अरेस्ट की कार्रवाई जारी रहेगी।

स्टेशनरी की दुकान में लगी आग, महिला व दो बच्चों को बचाया

प्रयागराज। लूकरगंज में बुधवार सुबह मकान के निचले हिस्से में चल रही स्टेशनरी की दुकान में आग लग गई। आग इतनी तेजी से फैली कि कुछ ही देर में मकान के अंदर धुआं भर गया। ऊपरी मंजिल पर मौजूद महिला और दो बच्चे धुएं के बीच फंस गए। आसपास और दमकलकर्मियों की मदद सभी को सुरक्षित बाहर निकाला गया। घटना सुबह करीब 10.28 बजे की है। मकान में सिद्धार्थ की पत्नी स्टेशनरी की दुकान चलाती हैं। सुबह दुकान बंद थी, तभी आग लग गई। ऊपरी मंजिल पर महिला व उनके दो बच्चों को धुएं से परेशानी हुई तो शोर मचाया। सूचना तत्काल अग्निशमन विभाग को दी गई। असपास के लोग और एफएसओ राजेश दो दमकल गाड़ी के साथ पहुंचे। महिला और बच्चों को बाहर निकाला गया। ब्यूरो फायरकर्मियों ने बताया कि घर में चार गैस सिलिंडर रखे थे। आग अगर समय रहते नियंत्रित नहीं होती तो बड़ा हादसा हो सकता था। शुरुआती जांच में आग का कारण शॉर्ट सर्किट की संभावना जताई जा रही है। हालांकि, वास्तविक कारणों की जांच की जा रही है। आग से दुकान में रखे सामान के नुकसान का आकलन किया जा रहा।

'जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के लिए वैज्ञानिक रणनीति जरूरी', लखनऊ में शिवराज ने योगी संग कृषि-ग्रामीण विकास पर चर्चा की

लखनऊ (संवाददाता)। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान गुरुवार को लखनऊ पहुंचे। उन्होंने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उपमुख्यमंत्री, कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही और ग्रामीण विकास विभाग के अधिकारियों के साथ कृषि एवं ग्रामीण विकास से जुड़े मुद्दों पर व्यापक चर्चा की।

बैठक में जलवायु परिवर्तन, बढ़ते तापमान, खरीफ सीजन की तैयारियों, जल संरक्षण और कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक रोडमैप तैयार करने पर विशेष फोकस रहा। इस दौरान शिवराज सिंह चौहान ने आपातकाल की वर्षगांठ पर कांग्रेस पर भी निशाना साधते हुए इसे संविधान हत्या दिवस बताया।

लखनऊ पहुंचने पर उत्तर प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान का चौधरी चरण सिंह अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर स्वागत किया। इसके बाद वह निर्धारित कार्यक्रम के तहत कृषि और ग्रामीण विकास से जुड़ी बैठकों में शामिल हुए।

यूपी कृषि में देश का सिरमौर प्रदेशरू शिवराज

मीडिया से बातचीत में केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि उत्तर प्रदेश देश की कृषि व्यवस्था का प्रमुख केंद्र है और कृषि उत्पादन के मामले में अग्रणी राज्यों में शामिल है। उन्होंने कहा, ष्आज मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री, कृषि मंत्री और ग्रामीण विकास मंत्री के साथ कृषि और ग्रामीण विकास पर व्यापक चर्चा होनी है। उत्तर प्रदेश कृषि में हमारा सिरमौर प्रदेश है। वर्तमान परिस्थितियों में जलवायु परिवर्तन और लगातार बढ़ते तापमान को देखते हुए कृषि के लिए वैज्ञानिक रोडमैप तैयार करना जरूरी हो गया है।ष उन्होंने कहा कि किसानों की आय बढ़ाने और खेती को बदलती परिस्थितियों के अनुरूप बनाने के लिए नई तकनीकों और वैज्ञानिक उपायों को अपनाना समय की मांग है।

खरीफ सीजन–2026 की तैयारियों पर भी हुआ मंथन

इससे एक दिन पहले 24 जून को कृषि भवन, लखनऊ से केंद्रीय कृषि मंत्री की अध्यक्षता में खरीफ सीजन–2026 की तैयारियों को लेकर महत्वपूर्ण वर्चुअल समीक्षा बैठक आयोजित की गई थी। बैठक में मानसून की संभावित चुनौतियों और मौसम में हो रहे बदलावों को ध्यान में रखते हुए सूखा सहनशील बीजों के उपयोग, जल संरक्षण, सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली, डीएसआर तकनीक से धान की बुआई, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना और दलहन उत्पादन बढ़ाने जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में किसानों के हितों की सुरक्षा और कृषि उत्पादन को मजबूत बनाए रखने के लिए आवश्यक दिशा–निर्देश भी दिए गए।

जल संरक्षण और आधुनिक तकनीक पर रहेगा फोकस

बैठक में कृषि विशेषज्ञों और अधिकारियों ने जल संकट की चुनौतियों को देखते हुए माइक्रो इरिगेशन, वर्षा जल संचयन और कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली तकनीकों के इस्तेमाल पर जोर दिया। साथ ही धान की खेती में डायरेक्ट सीडेड राइस (क्वै) तकनीक को बढ़ावा देने और दलहन उत्पादन बढ़ाने की रणनीति पर भी चर्चा हुई।

आपातकाल को बताया संविधान हत्या दिवस

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने 25 जून को आपातकाल लागू किए जाने की वर्षगांठ का उल्लेख करते हुए कांग्रेस पर हमला बोला। उन्होंने कहा, ष्आज संविधान हत्या दिवस है। आज ही के दिन इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल लगाया था। लोकतंत्र का गला घोंट दिया गया था और पूरे देश को जेलखाना बना दिया गया था। उस दौर में लोगों पर अत्याचार हुए थे।

उन्होंने कहा कि सभी नागरिकों को यह संकल्प लेना चाहिए कि संविधान और लोकतंत्र की रक्षा के लिए हमेशा सजग और प्रतिबद्ध रहेंगे।

वरिष्ठ अधिकारी भी रहे मौजूद

खरीफ सीजन की तैयारियों को लेकर हुई समीक्षा बैठक में कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही, कृषि निदेशक पंकज त्रिपाठी सहित कृषि विभाग के कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। बैठक में कृषि क्षेत्र की चुनौतियों और उनके समाधान को लेकर विस्तृत विचार–विमर्श किया गया।

सीएम योगी–शिवराज बैठक के 10 बड़े फैसले– 1. गेहूं, चना और मसूर की डैच खरीद अवधि बढ़ी। रबी विपणन वर्ष 2026–27 में न्यूनतम समर्थन मूल्य (डैच) पर खरीद की अंतिम तिथि 24 जून से बढ़ाकर 8 जुलाई 2026 कर दी गई है, जिससे लाखों किसानों को राहत मिलेगी। 2. यूपी के लिए 6.18 लाख पक्के मकानों की मंजूरी प्रधानमंत्री आवास योजना–ग्रामीण के नए चरण में उत्तर प्रदेश को 6,18,482 नए पक्के मकानों की स्वीकृति दी गई। 3. यूपी से होगी नए चरण की शुरुआत पीएम आवास योजना–ग्रामीण के तहत नए चरण में मकानों के आवंटन और निर्माण प्रक्रिया की शुरुआत उत्तर प्रदेश से की जाएगी। 4. कृषि के लिए बनेगा साइंटिफिक रोडमैप जलवायु परिवर्तन, बढ़ते तापमान और भूजल संकट को देखते हुए यूपी के लिए दीर्घकालिक वैज्ञानिक कृषि रोडमैप तैयार किया जाएगा। 5. अल नीनो और कम बारिश से निपटने की तैयारी संभावित सूखे और कम वर्षा की स्थिति को देखते हुए वैकल्पिक फसल योजना और जिला स्तर पर कंटिंजेंसी प्लान तैयार किया जाएगा। 6. कम अवधि और कम पानी वाली फसलों को बढ़ावा सरकार ऐसे बीजों और फसलों को प्रोत्साहित करेगी जो कम पानी में तैयार हों और किसानों को बेहतर उत्पादन दें। 7. फसल विविधीकरण पर जोर किसानों को पारंपरिक खेती के साथ दलहन, तिलहन और अन्य लाभकारी फसलों की ओर प्रोत्साहित किया जाएगा। 8. जल संरक्षण और आधुनिक सिंचाई को प्राथमिकता माइक्रो इरिगेशन, ड्रिप सिंचाई, वर्षा जल संचयन और जल संरक्षण के उपायों को बड़े स्तर पर लागू किया जाएगा। 9. गरीब परिवारों की पहचान पूरी, अब मकान वितरण पर फोकस ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वे पूरा हो चुका है। पात्र परिवारों को प्राथमिकता के आधार पर पक्का घर उपलब्ध कराया जाएगा। 10. यूपी को कृषि और ग्रामीण विकास का राष्ट्रीय मॉडल बनाने का लक्ष्य केंद्र और राज्य सरकार ने मिलकर किसानों की आय बढ़ाने, गांवों को समृद्ध बनाने और उत्तर प्रदेश को कृषि एवं ग्रामीण विकास का राष्ट्रीय मॉडल बनाने की दिशा में काम करने का संकल्प दोहराया।

है यह गेंदा फूल

हिंदी जिसको कह रही, है यह गेंदा फूल।
कन्नड़ 'चेन्डूहूवश कह, करती उसे कबूल।
करती उसे कबूल,गन्धपुष्पक कह संस्कृत।
भरती मधुर सुगन्ध,सदा जग को कर झंकृत।
सुन लो कहें प्रदीप, हजारा कहते सिन्धी।
गलगोटा गुजरात, बताती सबको हिन्दी।।

अंग्रेजी में कह रहे, जिसको मेरीगोल्ड।
चीनी 'गुल्तेराश कहें, बात बहुत है ओल्ड।
बात बहुत है ओल्ड, फ्रेंच में 'सोसीश कहते।
जर्मन में सब कह रहे, इसे 'रिंगेलब्लूमेश।
सुन लो कहें प्रदीप, नाम रख गेंदा देशी।
स्पेनिश कैलेंडुला, कहे, कहता अंग्रेजी।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

शहर समता विचार मंच (महिला) कानपुर इकाई की जून माह की काव्यगोष्ठी सम्पन्न

कानपुर। शहर समता विचार मंच महिला गोष्ठी कानपुर इकाई की महिला काव्य गोष्ठी पुष्पा सिंह के संयोजन में तथा श्रद्धा श्रीवास्तव की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई । इस काव्यगोष्ठी की मुख्य अतिथि सीमा वर्णिका तथा विशिष्ट अतिथि रेखा श्रीवास्तव, सुषमा त्रिपाठी व हेमा पांडे रहीं। यह काव्य गोष्ठी सायंकाल 4.00 बजे से 5.30 बजे तक चली

जिसका शुभारंभ अध्यक्षता कर रही श्रद्धा द्वारा दीप प्रज्वलन और सरस्वती की मूर्ति में माल्यार्पण द्वारा किया गया। सरस्वती वंदना की सुंदर प्रस्तुति सुषमा सिंह श्उर्मिश द्वारा की गयी। काव्य गोष्ठी का कुशल संचालन पुष्पा सिंह ने किया। इस काव्य गोष्ठी में हेमा पांडे, रेखा श्रीवास्तव, सुषमा त्रिपाठी, सुनीता गुप्ता, सुषमा सिंह उर्मि , सीमा वर्णिका, श्रद्धा श्रीवास्तव तथा पुष्पा सिंह ने अपनी सुंदर रचनाओं की प्रस्तुति द्वारा आयोजन में चार चाँद लगा दियें। अध्यक्षीय सम्बोधन के बाद धन्यवाद ज्ञापन कानपुर इकाई की जिलाध्यक्ष श्रद्धा श्रीवास्तव ने किया।

लखनऊ अग्निकांड मृतकों को दी गई श्रद्धांजलि, 101 पक्षियों को आजाद किया

लखनऊ (संवाददाता)। अलीगंज अग्निकांड में जान गंवाने वाले बच्चों की याद में गुरुवार को सदर लखनऊ व्यापार मंडल की ओर से श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान 1090 चौराहे पर 101 पक्षियों को पिंजरे से मुक्त कर दिवंगत बच्चों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्रद्धांजलि देते समय कई लोगों की आंखें नम हो गई।

सदर व्यापार मंडल के अध्यक्ष सतबीर सिंह राजू के नेतृत्व में व्यापार मंडल के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने दो मिनट का मौन रखकर मृतक बच्चों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। उपस्थित लोगों ने कहा कि यह घटना अत्यंत दुखद और हृदयविदारक है, जिसने पूरे समाज को झकझोर कर रख दिया है। कई दिन गुजर जाने के बाद भी बच्चों की तस्वीर आंखों के सामने है। सतबीर सिंह राजू ने कहा कि इस भीषण हादसे में कई होनहार बच्चों की मृत्यु हुई है, जिसकी भरपाई कभी नहीं की जा सकती।

उन्होंने कहा कि मासूम बच्चों का यूं असमय चले जाना पूरे समाज के लिए बड़ी क्षति है। सभी नागरिकों को पीड़ित परिवारों के दुख में सहभागी बनना चाहिए और उन्हें हर संभव सहयोग प्रदान करना चाहिए। व्यापार मंडल के पदाधिकारियों ने ईश्वर से प्रार्थना की कि दिवंगत बच्चों की आत्माओं को शांति मिले और शोकाकुल परिवारों को इस कठिन समय में दुख सहन करने की शक्ति प्राप्त हो। जिन परिवारों ने अपने बच्चों को खोया है, उनके दर्द को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। श्रद्धांजलि के दौरान सुनील वैश (महामंत्री), विपिन वैश दयाल (मंत्री), संजय केसरवानी (मंत्री), रणवीर सिंह सहित बड़ी संख्या में व्यापार मंडल के पदाधिकारी और सदस्य मौजूद रहे।

वी0पी0सिंह ने उन समाज के वंचित वर्गो को मुख्यधारा से जोड़ने का काम किया

लखनऊ (संवाददाता)। देश के पूर्व प्रधानमंत्री, उ0प्र के पूर्व मुख्यमंत्री और मण्डल कमीशन के मसीहा वीपी सिंह की जयंती आज राजधानी में मनायी गयी। इस अवसर पर होटल क्लार्क अवध में मण्डल मसीहा मेमोरियल सोसायटी के तत्वावधान में सामाजिक न्याय में वीपी सिंह की भूमिका विषय पर सेमिनार आयोजित किया गया। प्रदेश के वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता अब्दुल नासीर नासिर की अध्यक्षता में हुई संगोष्ठी में पूर्व मंत्री और लोक सभा सांसद बाबू सिंह कुशवाहा ने मुख्य अतिथि के तौर पर शिरकत की। इस मौके पर मौलाना मोहम्मद मुस्तफा मदनी नदवी ने कहा कि कुरआन में अल्लाह पाक ने इन्सानों के साथ भलाई, इंसाफ उनकी रक्षा और सुरक्षा समेत अन्य मानवीय व समाजी सेवाओं के लिए दूसरे इंसानों को जिम्मेदारी सौंपी है। अतः समाज की यह जिम्मेदारी है कि उन वर्गों के उत्थान के लिए काम करें जो पिछड़े और वंचित है। वी0पी0सिंह ने भी ऐसा ही किया। मुख्य अतिथि बाबू सिंह कुशवाहा ने कहा राजा साहब ने उन वर्गों के लिए काम किया जो छूट गए थे। इसके लिए उन्हें बड़ी कुर्बानी भी पेश करना पड़ी। आज बड़ी संख्या में लोगों को उसका लाभ मिल रहा है। सेवानिवृत आईपीएस अधिकारी डा0 बी0पी0 अशोक ने कहा कि राजनीतिक पार्टियों को भी मंडल कमीशन की सिफारिशों को पढ़ना और उसे लागू करने के लिए अपने घोषण पत्रों में शामिल करना चाहिए। मऊ नगरपालिका के चेयरमैन अरशद जमाल ने कहाकिवह अपने क्षेत्र में वी0पी सिंह साहब की यादगात स्थापित करेंगे। इसके अलावा प्रोफेसर महेंद्र कुमार मौर्य, डॉ वीरेन्द्र कुमार यादव, राम चन्द्र पटेल, मोतीलाल मेमोरियल ट्रस्ट के महासचिव राजेश सिंह व हद्य राम, विपत्ती सिहं यादव, पूर्व विधायक कुबैर भण्डारी, राम सागर पाल सहित अन्य लोगों ने भी विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर पद्म श्री प्रो0 शादाब मोहम्मद केजीएमयू, अरशद जमाल, इलियास बइराईची, मोहम्मद आजम खान, संगीता पाल, रूशदा, बी0पी0ओशक आदि को सम्मानित किया गया। अब्दुल नसीर नासिर ने अध्यक्षयी भाषण में विश्वनाथ प्रताप सिंह को सरकारी तौर पर याद किये जाने पर भी जोर दिया। कार्यक्रम का संचालन समाजसेवी मोहम्मद गुफरान नसीम ने किया। इस अवसर पर डा0 रवीन्द्र सिंह , डा0 विरेन्द्र सिंह यादव, सऊदुल हसन, डा0 अब्दुल्लाह नासिर, स0पा0 प्रवक्ता मोहम्मद आजम खान, खिलाड़ी व कोच सलीम बाक्सर, मुजीबुर्रहमान समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

महंगाई और वैश्विक चुनौतियों के बावजूद भारत में निवेश के अवसर मजबूत

लखनऊ (संवाददाता)। बढ़ती महंगाई, कच्चे तेल की ऊंची कीमतों और विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की निकासी के बावजूद भारत दुनिया की बेहतर प्रदर्शन करने वाली बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में बना हुआ है। यह जानकारी पीएल वेल्थ की जून 2026 मार्केट आउटलुक रिपोर्ट में दी गयी। रिपोर्ट में मजबूत घरेलू मांग, विनिर्माण एवं सेवा क्षेत्र की सक्रियता, बैंक ऋण में अच्छी वृद्धि और बाजार में पर्याप्त लिक्विडिटी को इसकी प्रमुख वजह बताया गया है। रिपोर्ट के अनुसार मई 2026 में विनिर्माण और सेवा क्षेत्र का पीएमआई क्रमशः 55.0 और 59.8 रहा, जो दुनिया की कई प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में बेहतर है। संस्थागत और खुदरा निवेशकों की सक्रिय भागीदारी ने एफआईआई निकासी के बावजूद बाजार को स्थिर बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पीएल वेल्थ के सीईओ इंदरबीर जॉली ने कहा उपभोग, उत्पादन, बुनियादी ढांचा निवेश और वित्तीय बचत में बढ़ोतरी जैसे घरेलू कारक भारत की विकास कहानी को मजबूती प्रदान कर रहे हैं। वैश्विक अनिश्चितताओं के बावजूद भारत की दीर्घकालिक विकास संभावनाएं मजबूत बनी हुई हैं और निवेशकों को गुणवत्तापूर्ण कंपनियों में अनुशासित निवेश पर ध्यान देना चाहिए। हालांकि, रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें, पश्चिम एशिया में जारी भू–राजनीतिक तनाव और महंगाई का दबाव निकट भविष्य में बाजार में उतार–चढ़ाव बढ़ा सकते हैं। ऐसे में निवेशकों को चुनिंदा निवेश रणनीति अपनाने की सलाह दी गई है। रिपोर्ट के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों में मजबूत आर्थिक गतिविधियों के चलते भारत वित्त वर्ष 2026–27 की शुरुआत मजबूत स्थिति से करेगा।

2027 विधानसभा चुनाव से पहले यूपी बीजेपी की नई टीम का ऐलान, भाजपा का बड़ा संगठनात्मक फेरबदल

लखनऊ (संवाददाता)। आगामी विधानसभा और लोकसभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए भारतीय जनता पार्टी ने उत्तर प्रदेश में अपने संगठन को नया स्वरूप दे दिया है। पार्टी नेतृत्व ने प्रदेश स्तर पर व्यापक बदलाव करते हुए नई टीम की घोषणा की है, जिसमें सामाजिक और क्षेत्रीय संतुलन साधने के साथ–साथ नए

चेहरों को भी अहम जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं। भाजपा ने 46 पदाधिकारियों के नामों का ऐलान करते हुए संगठन को चुनावी मोड में लाने का संकेत दिया है। नई सूची में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के पुत्र नीरज सिंह को प्रदेश उपाध्यक्ष बनाया गया है। उन्हें विधायक पंकज सिंह के स्थान पर संगठन में यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी गई है। वहीं बाराबंकी की वरिष्ठ नेता प्रियंका रावत को पदोन्नत कर महामंत्री से प्रदेश उपाध्यक्ष बनाया गया है। भाजपा ने संगठन विस्तार के साथ राजनीतिक संदेश देने की भी कोशिश की है। समाजवादी पार्टी से जुड़ी रही पूजा पाल को प्रदेश उपाध्यक्ष बनाया गया है। पार्टी का मानना है कि विभिन्न सामाजिक वर्गों और क्षेत्रों के प्रभावशाली चेहरों को संगठन में शामिल कर आगामी चुनावों के लिए मजबूत आधार तैयार किया जा सकता है। पार्टी ने प्रदेश उपाध्यक्ष पद पर सुरेश राणा, सत्यपाल सैनी, ब्रज बहादुर, धर्मेंद्र सिंह, मोहित बेनीवाल, देवेश कोरी, प्रियंका रावत, दर्विुविजय शाक्य, रमेश सिंह, नीरज सिंह, अर्चना मिश्रा, पूजा पाल, शंकर गिरी, कामेश्वर सिंह, कृतिका अग्रवाल, सुरेश मौर्य, राजेश यादव, कृष्ण बिहारी राय और आलोक गुप्ता को जिम्मेदारी सौंपी है। प्रदेश महामंत्री के रूप में रामप्रताप सिंह चौहान, गीता शाक्य, अभिजात मिश्रा, उपेंद्र रावत, संजय राय, शंकर लोधी, दिलीप पटेल और राजेश चौधरी को जिम्मेदारी दी गई है। इनमें संजय राय पर एक बार फिर पार्टी ने भरोसा जताया है, जबकि राजेश चौधरी को भी संगठन में महत्वपूर्ण भूमिका सौंपी गई है। भाजपा ने प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के लिए नए क्षेत्रीय अध्यक्षों का भी ऐलान किया है। पश्चिम क्षेत्र की जिम्मेदारी नबाब सिंह नागर, ब्रज क्षेत्र की पूरन लाल लोधी, कानपुर क्षेत्र की राम किशोर साहू, अवध क्षेत्र की अवधेश द्विवेदी, काशी क्षेत्र की अशोक चौरसिया और गोरखपुर क्षेत्र की विनोद राय को दी गई है। युवाओं के बीच संगठन को मजबूत बनाने के उद्देश्य से रोहित मिश्रा को भारतीय जनता युवा मोर्चा का प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। इसके अलावा प्रकाश पाल को पिछड़ा वर्ग मोर्चा, देवेंद्र सिंह को किसान मोर्चा, अशोक रावत को अनुसूचित मोर्चा, सरोज कुशवाह को महिला मोर्चा और विद्याभूषण गोंड को अनुसूचित जनजाति मोर्चा का प्रदेश अध्यक्ष बनाया गया है।राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार भाजपा की नई टीम में सामाजिक और जातीय संतुलन को विशेष महत्व दिया गया है। विभिन्न वर्गों और समुदायों के प्रतिनिधित्व को बढ़ाते हुए संगठन को अधिक व्यापक बनाने की कोशिश की गई है। पार्टी का लक्ष्य 2027 के विधानसभा चुनाव और 2029 के लोकसभा चुनाव से पहले बूथ स्तर तक संगठन को मजबूत करना है। नई टीम के गठन को भाजपा की चुनावी रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जा रहा है, जिसके जरिए पार्टी प्रदेश में अपनी राजनीतिक पकड़ और मजबूत करने की तैयारी में जुटी है।

''महिला उद्यमियों की अगली पीढ़ी तैयार करने के लिए फिक्की फ्लो लखनऊ ने लॉन्च किया 'फ्लो SheRises 2026''

लखनऊ (संवाददाता)। महिला उद्यमिता को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने और महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसायों को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए फिक्की फ्लो लखनऊ चौप्टर ने अपनी चेयरपर्सन सिमरन साहनी के नेतृत्व में 'फ्लोैमत्पेमे 2026' के चौथे संस्करण का शुभारंभ किया। होटल क्लार्क अवध में आयोजित यह तीन दिवसीय विशेष एंटरप्रेन्योरशिप बूट कैंप 25 से 27 जून तक चलेगा। कार्यक्रम का उद्घाटन फिक्की फ्लो की राष्ट्रीय अध्यक्ष पूजा गर्ग एवं राष्ट्रीय स्टार्टअप प्रमुख प्रिया गौतम ने किया। इस अवसर पर पूजा गर्ग ने महिला उद्यमियों को नवाचार, नेतृत्व और आर्थिक विकास का प्रमुख वाहक बताते हुए ऐसे मंचों की आवश्यकता पर बल दिया।डमपजल स्टार्टअप हब और स्टार्ट इन यूपी के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य महिला उद्यमियों को व्यवसाय विस्तार, रणनीतिक नेतृत्व, वित्तीय प्रबंधन, ब्रांड निर्माण, फंडिंग और स्केलिंग से जुड़ी व्यावहारिक जानकारी एवं विशेषज्ञ मार्गदर्शन उपलब्ध कराना है।इस वर्ष कार्यक्रम के लिए विभिन्न क्षेत्रों से 100 से अधिक महिला उद्यमियों ने आवेदन किया था। एक कठोर चयन प्रक्रिया के बाद 33 प्रतिभाशाली महिला उद्यमियों को ऑफलाइन बूट कैंप में भाग लेने के लिए चुना गया। यह कार्यक्रम क्षेत्र में महिला उद्यमिता विकास के सबसे केंद्रित और प्रभावशाली प्लेटफॉर्म्स में से एक माना जा रहा है। थ्स्टैमत्पेमे 2026 केवल एक प्रशिक्षण कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक संरचित विकास यात्रा है। इसके प्रथम चरण में तीन दिवसीय गहन प्रशिक्षण एवं कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी। इसके बाद प्रतिभागियों की सहभागिता, प्रदर्शन और व्यवसायिक संभावनाओं के आधार पर शीर्ष 10 महिला उद्यमियों का चयन दूसरे चरण के लिए किया जाएगा, जहां उन्हें उद्योग विशेषज्ञों और व्यवसायिक नेताओं से विशेष वन–टू–वन मेंटरशिप प्राप्त होगी। कार्यक्रम का समापन प्रतिष्ठित राष्ट्रीय फ्लो स्टार्टअप कॉनक्लेव में होगा, जहां प्रतिभागियों को राष्ट्रीय स्तर पर अपने व्यवसाय को प्रस्तुत करने और व्यापक नेटवर्किंग के अवसर मिलेंगे। फिक्की फ्लो लखनऊ स्टार्टअप सेल की इस पहल का नेतृत्व देवांशी सेठ, एकता मौर्या और करिश्मा खन्ना कर रही हैं। उन्होंने महिला उद्यमियों के लिए सीखने, नेतृत्व विकास और व्यवसाय विस्तार का एक सशक्त मंच तैयार किया है। इस अवसर पर फिक्की फ्लो लखनऊ की चेयरपर्सन सिमरन साहनी ने कहा, ''महिला उद्यमी आज केवल सफल व्यवसाय नहीं चला रहीं, बल्कि नवाचार को बढ़ावा देने, रोजगार सृजन करने और भारत की आर्थिक प्रगति को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। माध्यम से हमारा उद्देश्य महिला फाउंडर्स को व्यवसायिक ज्ञान, रणनीतिक स्पष्टता, अनुभवी मेंटरशिप और मजबूत नेटवर्क उपलब्ध कराना है।

विशेष रेलगाड़ियों के अतिक्त फेरों का संचालन

भारतीय रेल द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित विशेष रेलगाड़ियों के अतिरिक्त फेरों के संचालन का निर्णय लिया गया है, यह रेलगाड़ियां अपने पूर्व निर्धारित समय, ठहराव, दिन एवं मार्ग पर चलेगी, जिसका विवरण निम्नवत है:-

गाड़ी संख्या	कहां से - कहां तक	दिन	वर्तमान तिथि	अतिरिक्त फेरे
01922	वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी - हडपसर	बुधवार	15.07.2026	22.07.2026 से 30.09.2026 तक
01921	हडपसर - वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी	गुरुवार	16.07.2026	23.07.2026 से 01.10.2026 तक
01924	वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी - हडपसर	शनिवार	11.07.2026	18.07.2026 से 26.09.2026 तक
01923	हडपसर - वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी	रविवार	12.07.2026	19.07.2026 से 27.09.2026 तक

गाड़ी संरचना: वातानुकूलित द्वितीय श्रेणी: 01, वातानुकूलित तृतीय श्रेणी: 03, स्लीपर श्रेणी: 10, सामान्य श्रेणी: 06

गाड़ी संख्या	कहां से - कहां तक	दिन	वर्तमान तिथि	अतिरिक्त फेरे
04151	कानपुर सेंट्रल - लोकमान्य तिलक (ट.)	शुक्रवार	10.07.2026	17.07.2026 से 25.09.2026 तक
04152	लोकमान्य तिलक (ट.) - कानपुर सेंट्रल	शनिवार	11.07.2026	18.07.2026 से 26.09.2026 तक

गाड़ी संरचना: सामान्य श्रेणी: 08, स्लीपर श्रेणी: 09, वातानुकूलित तृतीय श्रेणी: 04, वातानुकूलित द्वितीय श्रेणी: 01

नोट– ट्रेनों की समय–सारणी से सम्बन्धित जानकारी हेतु हेल्पलाइन नं0 139 या Rail madad Mobile App या वेबसाइट railmadad.indianrailways.gov.in का प्रयोग करें।

उत्तर मध्य रेलवे

CPRONCR | North central railways | www.ncr.indianrailways.gov.in | 1452/26(DG)

सम्पादकीय.....

पंजाबी संस्कृति का अपहरण: बुल्ले शाह से बंदूक तक

पंजाब सदियों से अपनी जीवंत संस्कृति, समृद्ध परम्पराओं और अदम्य जज्बे के लिए जाना जाता रहा है। पंजाब की आत्मा बहादुरी, करुणा, मेहनत, अतिथि–सत्कार, त्याग और आध्यात्मिकता जैसे मूल्यों में बसती है। यह बाबा फरीद और बुल्ले शाह जैसे संतों, शिव कुमार बटालवी जैसे कवियों और हीर–रांझा, सोहनी–महिवाल तथा मिर्जा–साहिबां जैसी अमर प्रेम कहानियों की धरती है। पंजाबी संस्कृति हमेशा से जीवन, भावनाओं, संगीत और मानवीय मूल्यों का उत्सव रही है। कई दशकों तक पंजाबी संगीत ने इन आदर्शों को जीवित रखा। गुरदास मान, हंस राज हंस, सुरिंदर कौर, सुरिंदर छिंदा और अनेक कलाकारों ने अपने गीतों के माध्यम से पंजाब की लोक परंपराओं और सामाजिक मूल्यों को आगे बढ़ाया। उनके गीत किसानों, माताओं, प्रेम, साहस, अध्यात्म और ग्रामीण जीवन की सुंदरता का चित्रण करते थे।लेकिन पिछले 2 दशकों में पंजाबी पॉप संगीत का एक हिस्सा ड्क्षचताजनक दिशा में बढ़ गया है। पश्चिमी संगीत और पंजाबी लोक संगीत के मेल से शुरू हुई यह धारा धीरे–धीरे भौतिकवाद, ड्क्षहसा और अपराध को बढ़ावा देने का माध्यम बनती जा रही है। यह कहना गलत होगा कि पूरा पंजाबी संगीत ऐसा है लेकिन एक प्रभावशाली वर्ग पंजाब की छवि को विकृत और युवाओं की सोच को प्रभावित कर रहा है। सबसे चिंताजनक प्रवृत्ति गैंगस्टर संस्कृति का महिमामंडन है। कई गीत अपराधियों को नायक के रूप में प्रस्तुत करते हैं और ड्क्षहसा, धमकी तथा कानून तोडने वाले जीवन को आकर्षक बनाकर दिखाते हैं। गीतों में गैंग, बदला, एफ.आई.आर., पुलिस मुठभेड़, जेल और राजनीतिक प्रभाव जैसी चीजों को शक्ति और प्रतिष्ठा का प्रतीक बताया जाता है। इससे युवाओं में यह गलत संदेश जाता है कि सम्मान और पहचान मेहनत और शिक्षा से नहीं, बल्कि डर और दबदबे से मिलती है। इसी प्रकार हथियारों और हिंसा को भी सामान्य और आकर्षक बनाया जा रहा है। पिस्तौल, राइफल, ए.के.–47, ग्लॉक और अन्य हथियार अब गीतों और संगीत वीडियो का नियमित हिस्सा बन चुके हैं। जो बातें पहले समाज में अस्वीकार्य मानी जाती थीं, उन्हें अब फैशन और स्टाइल के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। बार–बार हथियारों का प्रदर्शन और आक्रामक व्यवहार युवाओं के मन में हिंसा को स्वीकार्य बना देता है। पंजाब वीरों की धरती अवश्य है लेकिन वीरता और ड्क्षहसा में बहुत बड़ा अंतर है। पंजाब की वास्तविक बहादुरी कमजोरों की रक्षा करने और अन्याय के खिलाफ खड़े होने में रही है, न कि हथियारों के दम पर लोगों को डराने में। पंजाबी पॉप संगीत ने उपभोक्तावाद और दिखावे की संस्कृति को भी बढ़ावा दिया है। अनेक गीतों में महंगे विदेशी ब्रांड, लग्जरी कारें, डिजाइनर कपड़े और आलीशान जीवनशैली को सफलता का पर्याय बना दिया गया है। आज सफलता को मेहनत, चरित्र और उपलब्धियों से नहीं, बल्कि महंगी वस्तुओं के प्रदर्शन से जोड़ा जा रहा है। इसका असर यह हुआ है कि अनेक युवा अपनी पहचान और आत्मसम्मान को भौतिक वस्तुओं से जोडने लगे हैं। सोशल मीडिया ने इस प्रवृत्ति को और बढ़ा दिया है। पंजाब की पारंपरिक सादगी, मेहनत और सामुदायिक भावना की जगह अब दिखावे और प्रतिस्पर्धा की संस्कृति लेती जा रही है।इस संगीत ने पुरुषत्व की परिभाषा को भी बदल दिया है। एक आदर्श पंजाबी युवक को अब जिम्मेदार बेटा, ईमानदार नागरिक या संवेदनशील इंसान के रूप में नहीं, बल्कि आक्रामक, अमीर और हथियार रखने वाले व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यह संदेश दिया जा रहा है कि सच्चा पुरुष वही है जो दूसरों पर अपना दबदबा बनाए रखे। इससे युवाओं के सामने सकारात्मक आदर्शों का अभाव पैदा हो रहा है। महिलाओं का वस्तुकरण भी एक गंभीर समस्या बन चुका है। अनेक गीतों में महिलाओं को सम्मानजनक व्यक्तित्व की बजाय केवल आकर्षण और प्रदर्शन की वस्तु के रूप में दिखाया जाता है। इससे समाज में महिलाओं के प्रति गलत धारणाएं मजबूत होती हैं, जबकि पंजाब का इतिहास साहसी और सशक्त महिलाओं से भरा पड़ा है। लोकप्रिय संस्कृति को उनकी गरिमा और योगदान का सम्मान करना चाहिए। इन प्रवृत्तियों के दुष्परिणाम अब समाज में दिखाई देने लगे हैं। नशाखोरी, गैंगस्टर नैटवर्क, हथियारों के प्रति आकर्षण और सोशल मीडिया पर दिखावे की प्रवृत्ति बढ़ रही है। यह कहना उचित नहीं होगा कि इन समस्याओं का कारण केवल संगीत है लेकिन यह निश्चित रूप से इन प्रवृत्तियों को बढ़ाने वाला एक शक्तिशाली माध्यम बन गया है। बार–बार ऐसे गीत सुनने से असामान्य व्यवहार भी सामान्य लगने लगता है। जब करोड़ों युवा प्रतिदिन ऐसे गीत सुनते हैं, जो अपराध, ड्क्षहसा और नशे का महिमामंडन करते हैं, तो उसका प्रभाव समाज पर अवश्य पड़ता है। समाधान पूरे पंजाबी पॉप संगीत को प्रतिबंधित करना नहीं है। पंजाबी संगीत में अपार रचनात्मक क्षमता है और उसने पंजाबी भाषा और संस्कृति को पूरी दुनिया तक पहुंचाया है। आवश्यकता जिम्मेदार रचनात्मकता की है। कलाकारों, संगीत निर्माताओं और श्रोताओं को मिलकर ऐसे संगीत को बढ़ावा देना होगा जो पंजाब की वास्तविक पहचान को सामने लाए। किसानों, उद्यमियों, सैनिकों, खिलाडियों, कवियों, संतों और मेहनतकश आम लोगों की कहानियां ही पंजाब की सच्ची ताकत हैं।

सिख धर्म का अभिन्न अंग 'कृपाण' विवादों में क्यों?

मनिंदर सिंह गिल

पांच ककार एक सिख की ध ार्मिक पहचान के अभिन्न अंग हैं, जिनमें से कृपाण ऐतिहासिक रूप से दशमेश पिता श्री गुरु गोड्क्षबद सिंह जी द्वारा हमें जुल्म का सामना करने के लिए बख्शी गई थी। शस्त्र नाम माला में गुरु साहिब ने धर्म की रक्षा के लिए उठाए गए सभी शस्त्रों को अपने पीर का दर्जा देकर शस्त्रों को एक बहुत ही सत्कार योग्य स्थान दिया है। आधुनिक काल में सिख भाईचारे ने पूरी दुनिया में प्रवास किया और अपनी जड़ें पश्चिमी देशों में भी जमाईं। इस समय तक कृपाण हमारी मर्यादा के कारण एक पूर्ण सिख के मानो शरीर का ही एक अंग बन चुकी थी, इसलिए सभी पश्चिमी देशों में सिखों को ध ार्मिक आजादी के चलते कृपाण धारण करने का अधिकार मिला था और इस अधिकार के लिए सिखों को लंबे संघर्ष भी करने पड़े थे। हाल ही में यू.के. में हुए एक हत्याकांड, जिसमें एक अमृतधारी सिख विक्रम दिगबा द्वारा एक किरच नुमा हथियार से वार करके हेनरी नोवैक को मौत के घाट उतार दिया गया और जब पुलिस मौके पर पहुंची तो हेनरी नोवैक पर नस्लीय हमला करने के झूठे आरोप लगा दिए गए, जिसके चलते जख्मी पड़े 18 साल के हेनरी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया लेकिन जख्मों की ताब न झेलते हुए हेनरी ने दम तोड़ दिया। इस घटना के बाद इंगलैंड और पूरी दुनिया में जहां पहले ही दक्षिणपंथी राजनीति के कारण आप्रवासी भाईचारे के खिलाफ नफरत और हिंसा उफान पर थी, वहीं इस घटना को कुछ दक्षिणपंथी राजनेताओं द्वारा एक बहाना बनाकर सिखों की धार्मिक आजादियां छीनने की मांग की जा रही है। इंगलैंड की रीस्टोर पार्टी के एम.पी. रूपर्ट लो ने तो कृपाण पर बैन लगाने तक की मांग कर दी। रूपर्ट लो के इन भेदभावपूर्ण बयानों को 'एक्स' के मालिक एलन मस्क ने रीट्वीट करके एक विश्वसनीयता दी, वहीं यह मामला अमरीका और यू.के. में राजनयिक तनाव का कारण भी बन गया क्योंकि अमरीका के उपराष्ट्रपति जे.डी. वेंस ने इस मामले को उभारकर अपनी आप्रवासी विरोधी नीतियों को जायज ठहराने का प्रयास किया। यू.के. का सिख भाईचारा इस मामले के इतना तूल पकड़ जाने के बाद चिंताओं में डूबा हुआ है कि उनके खिलाफ नफरत की लहर न उठ खड़ी हो। लेबर पार्टी के सांसद तनमनजीत सिंह ढेसी ने बार–बार यह दोहराया है कि इस आपसी झगड़े की एक घटना को लेकर समूचे भाईचारे के खिलाफ नफरत न फैलाई जाए लेकिन नफरत की राजनीति करने वाली और समाज के बीच ध्रुवीकरण करने वाली ताकतें इस मामले को सियासी तौर पर इस्तेमाल करने के लिए तत्पर हैं। अगर बात कनाडा की करें तो कनाडा एक ऐसा देश है जहां धार्मिक आजादी को चार्टर राइट्स के जरिए सुरक्षित किया गया है। कनाडा में कृपाण का मामला तब बहस में आया था, जब गुरबाज सिंह मुल्तानी नाम के एक विद्यार्थी के कृपाण धारण करने के अधिकार पर क्यूबेक के एक स्कूल बोर्ड ने रोक लगा दी थी। गुरबाज सिंह मुल्तानी इस फैसले के खिलाफ कनाडा की सुप्रीम कोर्ट में गया था, जहां अदालत ने फैसला गुरबाज सिंह मुल्तानी के हक में कर दिया और यह बात कही कि कृपाण धारण करना उसकी धार्मिक आजादी है लेकिन कृपाण के ऊपर जायज नियम सरकार लागू कर सकती है, जैसे कि कृपाण की लंबाई और यह कहा गया कि मुल्तानी कृपाण कपड़ों के अंदर ही धारण करेगा। इस तरह कनाडा में सिखों के धार्मिक अधिकार सुरक्षित हैं। भारत के संविधान की धारा 25 (अनुच्छेद 25) सिखों को कृपाण पहनने और धारण करने दोनों की आजादी प्रत्यक्ष रूप में देती है। यहां विडंबना यह है कि उसी ध ारा 25 के खिलाफ सिखों की राजनीतिक पाध्टयों ने झंडा उठा रखा है और सिखों को धारा 25 के संबंध में भ्रम में डाला है। इन राजनीतिक लोगों ने हमेशा यह गलत प्रचार किया कि धारा 25 सिखों को हिंदू कहती है और सिख धर्म के अलग होने को मान्यता नहीं देती, जोकि सरासर गलत बयानी है, क्योंकि धारा 25 में ड्क्षहदू, सिख, जैन और बौद्ध धर्म को सिर्फ एक विशेष संदर्भ के लिए ही ड्क्षहदू की परिभाषा में रखा गया है और वह विशेष संदर्भ है धार्मिक स्थानों पर जात–पात खत्म करना और धार्मिक स्थानों को हर जाति के व्यक्ति के लिए खोलना। यहां एक बड़ा सवाल यह भी उठता है कि कभी गौ–गरीब की रक्षा के लिए कृपाण को एक पवित्र हथियार के रूप में मान्यता मिलती थी, उसके बारे में तेजी से बदल रही जनभावना का आखिर कारण क्या है? हम जिस तरह आपसी झगड़ों और गोलक के विवाद पर कृपाणें लहराकर हुड़दंग मचाते हैं, उसने स्थानीय भाईचारे में इस पवित्र ककार को डर का प्रतीक बना दिया है। वह भी समय था जब किसी बस या पूरी रेलगाड़ी में यदि एक भी सिख सवारी मौजूद होती थी तो हर कोई अपने आप को सुरक्षित महसूस करता था लेकिन आज हमने अपनी हरकतों के कारण इस विशिष्ट रूप को तिरस्कार का पात्र बना दिया है। हम सिर जोड़कर क्यों नहीं सोचते कि जब दुनिया भर के समाज–विरोधी कार्य, चाहे वह लूट–खसोट हो, नशे की तस्करी या चोरी की वारदातें, उनमें हमारे ही भाइयों की तस्वीरें दस्तार और गातरे समेत क्यों छपती हैं? इस सारे विवाद में आज 'सरबत के भले' के दर्शन के मुताबिक देश–विदेश में बसी सिख संगत को एकत्रित होकर अपने धार्मिक चिन्हों की आजादी को बरकरार रखने के लिए शांतिपूर्ण ढंग के साथ अपना पक्ष रखना चाहिए और हर भाईचारे को सिखों के समाज निर्माण में योगदान और धार्मिक आस्था के बारे में जानकारी देनी चाहिए।

भीतर का खोखलापन और नशा: कटघरे में वर्तमान और खतरे में भविष्य

आज हमारा समाज एक ऐसे दोराहे पर खड़ा है, जहाँ तकनीकी प्रगति की चमक तो है, लेकिन उसके पीछे एक गहरी, स्याह खामोशी भी पसर रही है। नशा अब केवल बस्तियों की तंग गलियों का अभिशाप नहीं रहा, बल्कि यह आधुनिकता का मुखौटा पहनकर हमारे सुरक्षित समझे जाने वाले ड्राइंग रूम्स तक पहुँच चुका है। चौंकाने वाली हकीकत यह है कि आज हर दूसरे–तीसरे घर में कोई न कोई, जाने–अनजाने या लुके–छिपे इस दीमक का शिकार हो रहा है। लोक–लाज और सामाजिक प्रतिष्ठा के डर से असमर्थ माता–पिता इस सच को भीतर ही भीतर दबाए बैठे हैं, जबकि यह जहर उनकी अगली नस्ल की रगों को हर दिन थोड़ा और खोखला कर रहा है। जब देश की बौद्धिक और युवा ऊर्जा इस तरह खामोशी से आत्मघात की ओर बढ़ रही हो, तब व्यवस्था, कानून और समाज की चुप्पी किसी अपराध से कम नहीं है। यह समय उत्सवधर्मी विमर्श का नहीं, बल्कि इस मूक त्रासदी के खिलाफ एक सामूहिक और तीखी वैचारिक हुंकार भरने का है।

हुंकार भरो ऐ राष्ट्र–पुत्र! यह कैसा मौन सँभाला है?

जिस हाथ में होनी थी मशाल, उसमें विष का प्याला है!

मदहोश पड़े जो सोए हैं, उन्हें आज जगाना ही होगा,

इस भरमाई युवा पीढ़ी को फिर सिंह–नाद सिखलाना ही होगा।

कटघरे में युवा पीढ़ीरू भ्रम की आधुनिकता

आज की युवा पीढ़ी जिसे तकनीकी और वैचारिक रूप से सबसे उन्नत होना था, उसका एक बड़ा हिस्सा एक आत्मघाती भटकाव का शिकार है। जिसे वे श्कूलश दिखना, श्स्टेटस सिंबलश या आधुनिकता की पहचान समझते हैं, वह दरअसल उनकी असमय कब्र खोदने का औजार है।

सिगरेट के धुएं के छल्लों से शुरू होने वाला यह शौक कब केमिकल ड्रग्स, एमडी (डक), और सिंथेटिक नशीले पदार्थों के उस चक्रव्यूह में बदल जाता है, जहाँ से वापसी का कोई रास्ता नहीं होता। अवसाद (क्मचतमेपवद), एकाकीपन और रातों–रात सब कुछ पा लेने की अंधी दौड़ ने युवाओं की निर्णय क्षमता को पंगु बना दिया है। नतीजा यह है कि देश की सबसे बड़ी ताकतकृउसकी युवा ऊर्जाकृआज नशामुक्ति केंद्रों के बिस्तरों पर बेदम पड़ी है।

कटघरे में बड़ेरू श्डिजिटल पैरेंटिंगश और ढोंग का पर्दा

इस तबाही के लिए सिर्फ बच्चे जिम्मेदार नहीं हैं, असली अपराधी समाज के वो बड़े हैं जो खुद को बहुत समझदार समझते हैं।

दिखावे की संस्कृतिरू ऊंचे घरानों और संभ्रांत परिवारों की पार्टियों में जब शराब और नशा श्रईसी का पैमानाश बन जाए, तो वहाँ पलने वाले बच्चों से आप संस्कारों की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? जब रक्षक ही भक्षक की भूमिका के मूक समर्थक हों, तो दोष किसका?

पैसे की ओट में छिपती जिम्मेदारीरू आज के माता–पिता ने बच्चों को श्समयश देने के बजाय श्महंगे गैजेट्स और अंधाधुंध पॉकेट मनीश देना चुन लिया है। बच्चा डिप्रेशन में है या किसी गलत लत में, इसका पता तब चलता है जब पानी सिर से ऊपर जा चुका होता है।

छिपे हुए खतरेरू तकनीक और मानसिक अकेलापन

सस्ता और आसान श्डिजिटल ड्रग्स सप्लाईश्रू आज नशा खरीदने के लिए किसी तंग गली में नहीं जाना पड़ता। सोशल मीडिया और कूरियर सर्विसेज के माध्यम से ड्रग्स सीधे बच्चों के कमरों तक डिलीवर हो रहे हैं। तकनीक का यह काला चेहरा हमारी सुरक्षा व्यवस्था की पोल खोलता है।

मानसिक स्वास्थ्य के प्रति अज्ञानतारू युवा जब किसी मानसिक तनाव या असफलता से गुजरता है, तो परिवार उसकी काउंसलिंग करने के बजाय उसे कोसने लगता है। इसी मानसिक अकेलेपन का फायदा ड्रग पेडलर्स उठाते हैं।

साहित्यिक और सामाजिक चेतना की पुकार

नशे की हर एक घूँट जीवन का उजाला पी जाती है,

हँसती–खेलती जिंदगी को मौत का कफ़न पहनाती है।

उठो कि अब इस मूक संवाद को तोड़ना होगा,

भटकती हुई इस युवा पीढ़ी को सही राह मोड़ना होगा।

नशा सिर्फ एक शरीर को नहीं मारता, वह माँ की ममता को लहूलुहान करता है, पिता के रीढ़ की हड्डी तोड़ देता है और पूरे परिवार को जीते जी नरक भोगने पर मजबूर कर देता है। एक सजग समाज और लेखक होने के नाते मेरी कलम इस भयावह सच पर चुप नहीं रह सकती।

एक दिन की रस्म या हर पल का संकल्प?

यहाँ आकर एक बड़ा और चुभता हुआ सवाल यह खड़ा होता है कि क्या 26 जून को केवल एक दिन श्नशा मुक्ति दिवसश मना लेने से हमारी ज़िम्मेदारियाँ पूरी हो जाती हैं? क्या एक दिन की रैलियों, भाषणों और सोशल मीडिया के पोस्ट से इस फैलते जहर को रोका जा सकता है?

कदापि नहीं!

नशे का सौदागर किसी कैलेंडर को देखकर अपना शिकार नहीं चुनता। वह हर दिन, हर मिनट, हर सेकंड हमारे आस–पास जाल बिछा रहा है। जब तबाही का यह मंज़र हर पल सक्रिय है, तो इसके खिलाफ हमारा आह्वान, हमारी सजगता और हमारा प्रतिरोध भी हर दिन और हर मिनट होना चाहिए।

साल के बाकी 364 दिन आँखें मूँदकर बैठना और केवल एक दिन नशा मुक्ति की कसमें खाना एक ढोंग के सिवा कुछ नहीं है। हमें हर सुबह अपने घर के माहौल को देखना होगा, हर शाम अपने बच्चों की आँखों में झांकना होगा और हर पल समाज में फैल रही इस बुराई के खिलाफ मानसिक रूप से युद्धस्तर पर तैयार रहना होगा। जब तक नशा मुक्ति हमारे जीवन का दैनिक संस्कार नहीं बनेगी, तब तक यह समाज कभी पूरी तरह नशा–मुक्त नहीं हो सकेगा।

फैसले की घड़ी

तय आपको करना है आपको एक खोखली आधुनिकता चाहिए या एक सशक्त, होशमंद और जीवंत भारत? आइए, इस दिखावे के मुखौटे को उतारकर अपने बच्चों को बचाएं।

नशे को ना कहें; अपनी जिंदगी, अपने समाज और अपनों को हाँ कहें। क्योंकि जब खतरा हर पल है, तो संकल्प भी हर दिन, हर मिनट होना चाहिए।

डॉ. संगीता बनाफर प्रदेश अध्यक्ष विश्व हिंदी परिषद नई दिल्ली भारत छत्तीसगढ़,

बिलासपुर जिला अध्यक्ष शहर समता प्रयागराज, प्रदेश संयोजक प्रेस क्लब ऑफ़ वर्किंग जर्नलिस्ट

माह–ए–मोहर्रम

डॉ प्रदीप चत्रांशी

माह–ए– मोहर्रम कोई तेवहार (त्योहार) नहीं बल्कि इस्लामिक हिज़री कैलेंडर के मुताबिक साल का पहला माह है जो अरबी मूल से लिया गया है जिसका एक अर्थ 'निषिद्धश है। यह महीना भी उन चार महीनों में एक है जिसमें युद्ध करना वर्जित था।इस माह के अंदर कई ऐतिहासिक तारीखें दफ़्न हैं। हर एक तारीख की अपनी कहानी है। कर्बला की जंग में इमाम हुसैन (अलैहिस्सलाम) और इमाम हसन (अलैहिस्सलाम) की शहादत तथा हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) और उनकी कौम के लिए फिरदौस की हार, अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत का दिन होने के कारण यह महीना मुसलमानों के लिए बेहद खास हो जाता है। इस महीने की दसवीं तारीख को आशूरा या 'यौम–ए–आशूरा कहते हैं, जो अरबी से लिया गया है। यह तारीख इस महीने की बेहद खास तारीख है क्योंकि दो बेहद खास घटनायें इस दिन घटित हुई थीं। पहली घटना पैगंबर हज़रत मूसा(अलैहिस्सलाम) को मिस्र के फिरौन से मिली ऐतिहासिक जीत तथा दूसरी घटना हज़रत इमाम हुसैन (अलैहिस्सलाम)और उनके साथियों की शहादत से जुड़ा है। मुसलमान इसको इबादत, सुख, सब्र और इंसाफ के लिए पैगाम के तौर पर याद करते हैं। आइये, इसको हम सिलसिलेवार समझते हैं।

मिस्र के बादशाह फिरौन के अत्याचारों से तंग आकर पैगंबर मूसा (अलैहिस्सलाम),अल्लाह के हुक्म से अपनी कौम 'बनी इजराइल' (यहूदियों) को लेकर मिस्र से निकल गए। जब फिरौन अपनी विशाल सेना के साथ उनका पीछा करते हुए लाल सागर के किनारे तक पहुँच गया तब अल्लाह के आदेश पर पैगंबर मूसा(अलैहिस्सलाम) ने अपने लाठी से पानी को मारा। समुद्र में चमत्कारिक रूप से रास्ता बन गया और मूसा (अलैहिस्सलाम) की कौम सुरक्षित पार कर गई। जैसे ही फिरौन और उसकी सेना उसी रास्ते से गुजरी, समुद्र का पानी वापस मिल गया और फिरौन अपने सिपाहियों के साथ डूब कर खत्म हो गया। हजरत मूसा (अलैस्सलाम) और उनकी कौम को मिली इस ऐतिहासिक जीत और अल्लाह की रहम की याद में दस मोहर्रम को अल्लाह का शुक्र अदा करने के लिए रोज़ा रखा जाता है। अल्लाह के रसूल मुहम्मद साहब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जब मदीना पहुँचे, उन्होंने यहूदियों को आशूरा के दिन रोज़ा रखते हुए पाया। पैगंबर ने यहूदियों से पूछा कि वे इस दिन रोज़ा क्यों रखते हैं। उन्होंने बताया कि यह एक महान दिन है जिसमें अल्लाह ने मूसा और उनके लोगों की रक्षा की एवं फिरौन और उनके लोगों को लाल सागर में डुबो दिया। इस नेमत के शुक्राने में हजरत मूसा ने रोज़ा रखा था इसीलिए हम भी इस दिन रोज़ा रखते हैं। यह सुनकर पैगंबर मोहम्मद साहब (सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि वे दुनिया में मूसा (अलैहिस्सलाम) के सबसे ज्यादा करीबी हैं इसीलिए उन्होंने खुद रोज़ा रखा तथा मुसलमानों को भी रखने का आदेश दिया।

इमाम हुसैन इस्लाम धर्म के चौथे खलीफा हज़रत अली के समय मुस्लिम धर्म दो गुटों में बँट गया और जब हज़रत अली शहीद हो गए तब अगले खलीफा के फैसलों पर दोनों गुटों में तनाव बढ़ गया। ऐसे समय में हज़रत अली के बड़े बेटे इमाम हसन (अलैहिस्सलाम) ने दूसरे गुट के प्रमुख अमीर मुआविया के साथ समझौता कर लिया जिससे लड़ाई रोकी जा सके। उन्होंने मुआविया को खलीफा स्वीकार कर लिया और इस समझौते में यह तय हुआ कि मुआविया जब तक जिंदा रहेंगे, तब तक खलीफा बने रहेंगे तथा उनकी मृत्यु के बाद इमाम हसन (अलैहिस्सलाम) खलीफा बनेंगे। अमीर मुआविया के पुत्र यज़ीद ने पिता की मृत्यु को करीब देखकर, समझौते के विपरीत चालाकी से खुद को खलीफा घोषित कर दिया तथा एक साज़िश के तहत इमाम हसन (अलैहिस्सलाम) के खाने में जहर मिला दिया जिसके कारण वे शहीद हो गए। इमाम हुसैन के शहीद होने के बाद उनके छोटे भाई इमाम हुसैन बचे थे जो खलीफा बनने के योग्य थे लेकिन उन्हें खलीफा बनने की कोई चाहत नहीं थी, साथ ही साथ यज़ीद को खलीफा बनाए जाने के खिलाफ भी थे।

उस समय बसरा, कूफ़ा, मक्का और मदीना, इस्लाम धर्म के चार बड़े केंद्र थे। यज़ीद ने बसरा पर शासन जमा लिया था लेकिन मक्का और मदीना में इमाम हुसैन के समर्थक मौजूद थे। कूफ़ा के लोग चाहते थे कि इमाम हुसैन वहाँ पर आ जाएँ जिससे वे लोग उन्हें खलीफा घोषित कर सकें लेकिन इमाम हुसैन यह नहीं चाहते थे। वह किसी योय व्यक्ति को खलीफा बनाना चाहते थे। जैसे ही यह बात यज़ीद को पता चली तो उसने खूंखार किस्म के अफसर उबैदुल्लाह इब्न ज़ियाद को कूफ़ा का गवर्नर बना दिया। कूफ़ा के लोग खुद को सुरक्षित रखने के लिए, यज़ीद के अनुयायी हो गए।

कूफ़ा के लोगों का निमंत्रण स्वीकार कर जब वे बहत्तर लोगों के साथ कूफ़ा से लगभग पचहत्तर किलोमीटर दूर कर्बला पहुँचे ही थे कि इब्न ज़ियाद ने आदेश पढ़कर सुनाया कि वे यज़ीद का समर्थन करें वर्ना काफिले सहित कत्ल कर दिया जाएगा। इमाम हुसैन ने यज़ीद को समर्थन देने से साफ मना कर दिया। अब एक तरफ इब्न ज़ियाद के दस हजार सैनिक थे तो दूसरी तरफ इमाम हुसैन के बहत्तर साथी। मोहर्रम की दसवीं तारीख को इब्न ज़ियाद के सैनिको ने इमाम हुसैन के भूखे–प्यासे साथियों पर आक्रमण कर दिया।

इमाम हुसैन के सभी साथी वीरता से लड़ते हुए युद्ध के मैदान में शहीद हो गए। इमाम हुसैन ने अपने सामने ही अपने जवान भतीजे, चाचा और बेटे को शहीद होते देखा। अंदर से वह पूरी तरह टूट चुके थे लेकिन वह स्वयं मैदान में उतरे और वीरता से कई शत्रुओं को मौत के घाट उतार दिया। शत्रु उनके पराक्रम को देखकर आश्चर्य में थे। उन्हें फिक्र हो रही थी कि कहीं आज इतिहास न बन जाए। इमाम हुसैन की तलवार से शत्रु बहुत घबराए हुए थे। उनको अपनी मौत दिख रही थी। इसी बीच नमाज का वक्त हुआ। युद्ध में शत्रुओं से घिरे होने के बावजूद इमाम हुसैन ने नमाज़ नहीं छोड़ी और तलवार अलग रखकर नमाज़ के लिए खड़े हो गए। जैसे ही सजदे में गए एक शत्रु उन पर झपटा और सजदे की ही हालत में उन्हें शहीद कर दिया और उनका सिर, धड़ से अलग कर दिया। इसी दर्दनाक शहादत की याद में शिया मुसलमान काले कपड़े पहनते हैं और मातम मनाते हैं। हर हैसियतदार शिआओं के घर में एक अज़ाखाना होता है जिसमे मजलिसें चलती रहती हैं।

मंगोल शासक तैमूर लंग को भारत में मोहर्रम के जुलूस और ताजियादारी की शुरुआत करने वाला माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि तैमूर हर साल मुहर्रम मनाने इराक के कर्बला जाया करते थे। एक बार किसी कारणवश वह कर्बला नहीं जा सके तो अपने दरबारी और कलाकारों को इमाम हुसैन के रोज़े (मकबरे) की प्रतिकृति बनाने का आदेश दिया। बाँस और फूलों से सजाकर पहली बार कर्बला में मकबरे की यह प्रतिकृति तैमूर के महल में रखी गई थी,जिसे ताजिया कहा गया। इस परंपरा को तुगलक और मुगल बादशाहों ने भी आगे बढ़ाया। मोहर्रम के दौरान इमाम हुसैन की शहादत की याद में मातम मनाने और जुलूस निकालने की शुरुआत भी इसी काल के दौरान शिया परंपरा के प्रसार के साथ जुड़ी है। इसीलिए सुन्नी मुसलमान भी इमाम हुसैन और उनके साथियों की कर्बला में हुई शहादत का गहरा सम्मान और दुख व्यक्त करते हैं।

अपने हॉलीवुड करियर को बॉलीवुड के मुकाबले कमतर आंकती हैं प्रियंका, बोलीं- अभी बेस्ट काम आना बाकी

एक्टर प्रियंका चोपड़ा उन चुनिंदा भारतीय एक्टर्स में से एक हैं जिन्होंने बॉलीवुड और हॉलीवुड दोनों जगह कामयाबी हासिल की है। अपने हिंदी फिल्मी करियर के पीक पर वह इंटरनेशनल मौकों की तलाश में अमेरिका चली गईं। हालांकि, कई ग्लोबल प्रोजेक्ट्स में काम करने के बावजूद प्रियंका को लगता है कि हॉलीवुड में उनका काम भारतीय सिनेमा में किए गए उनके काम के मुकाबले कम ही है। कान लायंस सम्मेलन में बोलते हुए प्रियंका ने हॉलीवुड में अपने करियर पर नजर डाली और अलग–अलग प्रोजेक्ट्स के साथ इसे और आगे बढ़ाने की इच्छा व्यक्त की। 'बेवॉच', 'द मैट्रिक्स रेजरेक्शन्स' और हाल ही में रिलीज हुई 'द ब्लफ' जैसी हॉलीवुड फिल्मों में शानदार अभिनय के बावजूद प्रियंका ने कहा कि उन्हें लगता है कि हॉलीवुड में उनका बेस्ट काम अभी आना बाकी है। एक्ट्रेस ने कहा कि अपने हिंदी भाषा के करियर में मैंने सभी बेहतरीन फिल्म निर्माताओं और अभिनेताओं के साथ काम किया है, मैंने अद्भुत कहानियां सुनाई हैं और अलग–अलग जॉनर में काम किया है। जबकि अमेरिका में हॉलीवुड में अपने अंग्रेजी भाषा के काम में मैंने ऐसा उतना नहीं किया है। प्रियंका ने कहा कि अब उनका अगला चरण इस बात पर केंद्रित होगा कि वो हॉलीवुड में भी बॉलीवुड की तरह अलग–अलग तरह की भूमिकाएं निभाएं। अगला बदलाव यह पता लगाने के बारे में है कि मैं अपने हॉलीवुड के काम में अपने किरदारों में वैसी ही विविधता कैसे ला सकती हूं जैसी भारत में ला पाई हूं। इस दौरान प्रियंका ने शादी और मां बनने के बाद अपनी जिंदगी के बारे में भी खुलकर बात की और माना कि उनकी जिंदगी बहुत ज्यादा बदल गई है। उन्होंने कहा कि आपकी प्राथमिकताएं सच में बदल जाती हैं। अब मैं बस अपना सामान पैक करके किसी फिल्म के लिए नहीं निकल जाती। मैं साल में पांच फिल्में नहीं करती। मैं पहले की तरह यात्रा नहीं करती। मैं इस बात को लेकर बहुत ज्यादा सोच–समझकर फैसला करती हूं कि मैं अपना समय कैसे और किसके साथ बिताती हूं। मैं एक कामकाजी मां के तौर पर जिंदगी को संभाल रही हूं। अब मुझे अपनी मां के लिए और भी ज्यादा सम्मान महसूस होता है। वर्कफ्रंट की बात करें तो प्रियंका चोपड़ा आखिरी बार कार्ल अर्बन के साथ सिटाडेल के दूसरे सीजन

> इस दौरान प्रियंका ने शादी और मां बनने के बाद अपनी जिंदगी के बारे में भी खुलकर बात की और माना कि उनकी जिंदगी बहुत ज्यादा बदल गई है। उन्होंने कहा कि आपकी प्राथमिकताएं सच में बदल जाती हैं। अब मैं बस अपना सामान पैक करके किसी फिल्म के लिए नहीं निकल जाती।

और एडवेंचर फिल्म द ब्लफ में नजर आई थीं। अब वह कई साल बाद भारतीय सिनेमा में वापसी कर रही हैं। प्रियंका एसएस राजामौली की पैन–इंडिया फिल्म वाराणसी में नजर आएंगी। इस फिल्म में महेश बाबू और पृथ्वीराज सुकुमारन प्रमुख भूमिकाओं में नजर आएंगे। बड़े स्केल पर बनने वाली यह फिल्म 2027 में रिलीज होगी।

18 साल की उम्र में रुहानिका धवन ने खरीदी पहली गाड़ी, साड़ी पहनकर पहुंची शोरूम

त्नींदपां क्वींद रूये हैं मोहब्बतें में रूही का किरदार निभा कर रुहानिका धवन ने घर–घर में अपनी पहचान बनाई है। इसके बाद अब रुहानिका धवन को खतरों के खिलाड़ी 15 में देखा जाएगा। इस शो में रोहित शेट्टी के नेतृत्व में दर्शकों को रोमांच, एडवेंचर और हैरतअंगेज स्टंट्स का भरपूर डोज मिलने वाला है। खतरों के खिलाड़ी 15 में सबसे उम्र की खिलाडी रुहानिका धवन होंगी। इसी के साथ आपको बता दें कि बहुत ही कम उम्र में रुहानिका धवन ने अपनी पहली गाड़ी खरीद कर घरवालों का नाम रोशन कर दिया है। हाल ही में रुहानिका धवन ने अपने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर के अपने फैंस को खुशखबरी दी है कि उन्होंने अपनी पहली गाड़ी खरीदी है। इस मौके पर पर वो साड़ी पहनकर शोरूम पहुंची। इस पोस्ट के बाद हर कोई कमेंट सेक्शन में उनको बधाई दे रहा है। जैसमीन और दिव्यांका ने इस मौके पर रुहानिका धवन को बधाई दी है। वीडियो के साथ–साथ रुहानिका ने एक बहुत ही इमोशनल नोट भी लिखा है–सपना देखा। उसके लिए मेहनत की। उसे हासिल किया। 18 साल की उम्र में, मुझे हमेशा उम्मीद थी कि यह दिन आएगा लेकिन आज यहां खड़े होकर अपनी विशलिस्ट से अपनी कार खरीदना पूरा होते देखना बिल्कुल सपने जैसा लग रहा है। यह उपलब्धि सिर्फ एक कार के बारे में नहीं हैय यह उस सफर की झलक है जो जितना मुश्किल रहा है, उतना ही फायदेमंद भी। सबसे पहले, मैं भगवान, अपने शानदार माता–पिता और अपने गुरुओं का शुक्रिया अदा करता हूं। मेरे टीचर्स, बेहतरीन ब्रांड्स और उन सभी शानदार लोगों का जिन्होंने मुझे खुद को साबित करने का प्लेटफॉर्म और मौके दिए मुझ पर भरोसा करने के लिए आपका धन्यवाद। मैं उन सभी का बहुत आभारी हूँ जिन्होंने मुझे बेहतर इंसान बनने में मदद की, और अपने समर्पित स्टाफ, अपनी टीम और घर में मदद करने वाले लोगों का दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ जो हर दिन पर्दे के पीछे से मेरा साथ देते हैं। यह सफर आसान नहीं रहा है लेकिन हर मुश्किल ने मुझे कुछ सिखाया है। मेरे दिल से एक बात मैं इसे सिर्फ एक सपना पूरा होने का जश्न मनाने और अपना सफर शेयर करने के लिए बता रहा हूँ,कभी भी दबाव बनाने या तुलना करने के लिए नहीं। हम सब अपनी–अपनी दौड़ दौड़ते हैं और हमारे लक्ष्य और समय–सीमाएँ बिल्कुल अलग–अलग होती हैं। लेकिन अगर कोई एक चीज है जिसके लिए मैं हमेशा कहूँगा, तो वह है बड़े सपने देखना। लगातार मेहनत, हिम्मत और भरोसे के साथ, जो सपने आज आपको पहुँच से बाहर लगते हैं, वे सच में कल आपकी हकीकत बन सकते हैं। पहले सेमेस्टर की परीक्षाएं खत्म होते ही रुहानिका धवन ने आराम करने के बजाय सीधे खतरों के खिलाड़ी 15 की शूटिंग का रुख किया। इस एडवेंचर रियलिटी शो में उन्होंने अपनी पढ़ाई और प्रोफेशनल कमिटमेंट्स के बीच शानदार संतुलन दिखाया। शो के दौरान रुहानिका ने रोहित शेट्टी के मार्गदर्शन में कई कठिन चुनौतियों का सामना करते हुए अपनी हिम्मत, मानसिक दृढ़ता और शारीरिक क्षमता को परखा। अब शो की शूटिंग पूरी हो चुकी है और रुहानिका अपने घर लौट आई हैं, जहां वह अपने इस खास अनुभव की यादों को संजो रही हैं।

मिर्जापुर-द मूवी का टीजर हुआ रिलीज, डबल एक्शन और दमदार कहानी के साथ आ रही फिल्म

मेकर्स ने टीजर रिलीज कर दिया है। टीजर में पंकज त्रिपाठी, अली फजल और दिव्येंदु काफी खतरनाक अवतार में नजर आए। तीनों के बीच मिर्जापुर की गद्दी की लड़ाई जारी है। टीजर में अली फजल और दिव्येंदु शानदार एक्शन करते नजर आ रहे हैं। फिल्म में नए किरदारों की एंट्री हुई है। फिल्म में पंचायत फेम जितेंद्र कुमार और रवि किशन की एंट्री हुई है। दोनों टीजर में काफी अलग और अनोखे अंदाज में नजर आए हैं। टीजर देखकर लगता है कि दोनों का रोल काफी अहम होने वाला है। साथ ही ये भी कयास लगाए जा रहे हैं कि जितेंद्र बबलू पंडित के किरदार में नजर आ सकते हैं, क्योंकि टीजर में विक्रांत कहीं नजर नहीं आए हैं। इसके अलावा फिल्म की ऑरिजिनल स्टार कास्ट नजर आने वाली है। रवि किशन– हम कब बोले कि नमक खाने में डालना है। (रवि किशन अपने साथी से बोलते हैं कि नमक ले आओ। तो उनका साथी कहता है कि नमक तो ठीक है भैया। इसपर रवि ये डायलॉग कहते हैं और इस सीन में वे एक लहूलुहान शख्स पर नमक डाल देते हैं।) इस फिल्म में 'मिर्जापुर' के आइकॉनिक किरदार फिर से देखने को मिलेंगे। कलीन भैया, गुड्डू पंडित और साथ ही सबसे ज्यादा पसंद किए जाने वाले किरदार मुन्ना भैया दिव्येंदु की वापसी भी होगी। फिल्म की स्टार कास्ट काफी बड़ी है, जिसमें जितेंद्र कुमार, रवि किशन, अभिषेक बनर्जी, रसिका दुग्गल, श्वेता त्रिपाठी, श्रिया पिलगांवकर, हर्षिता गौड़, सुशांत सिंह, मोहित मलिक, शीबा चड्ढा, राजेश तैलंग, कुलभूषण खरबंदा, सोनल चौहान, प्रमोद पाठक और अनंगशा बिस्वास शामिल हैं। 'मिर्जापुर द मूवी' 4 सितंबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। मिर्जापुर– द मूवी का निर्देशन गुरमीत सिंह ने किया है। इसे पुनीत कृष्णा ने लिखा है। इसे एक्सेल एंटरटेनमेंट के बैनर तले रितेश सिधवानी और फरहान अख्तर ने प्रोड्यूस किया है। इस फिल्म के को–प्रोड्यूसर कासिम जगमगिया और विशाल रामचंदानी हैं। इसे 4 सितंबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज किया जाएगा।

कौन है बोनी कपूर के होने वाले दामाद रोहन ठक्कर? जानें उनकी नटेवर्थ

जल्द ही बोनी कपूर की बड़ी बेटी अंशुला शादी के बंधन में बंधने वाली है। आपको बता दें कि वो अपने बॉयफ्रेंड संग शादी रचाने को तैयार हैं और उनके प्री–वेडिंग फंक्शन्स भी शुरू हो चुके हैं। ऐसे में हर कोई यह जानने को काफी उत्सुक है कि आखिर बोनी कपूर के होने वाले दामाद क्या करते हैं और उनकी नेट वर्थ कितनी है? काफी समय से अंशुला रोहन ठक्कर को डेट कर रही है और अब वो जल्द ही शादी करने वाले हैं। आपको बता दें कि रोहना ठक्कर एक स्क्रिप्ट राइटर हैं। वह मनोरंजन जगत में धीरे–धीरे अपनी अलग पहचान बनाने में जुटे हुए हैं। अब तक वह कई भाषाओं की फिल्मों और प्रोजेक्ट्स में स्क्रीनराइटर के रूप में काम कर चुके हैं और अपने लेखन कौशल से इंडस्ट्री में जगह बना रहे हैं। धर्माटिक एंटरटेनमेंट जो फिल्म मेकर करण जोहर का प्रोडक्शन हाउस है, रोहन ठक्कर यहां एक फ्रीलांस राइटर के रूप में काम करते हैं। इसी के साथ आपको बता दें कि उन्होंने न्यूयॉर्क फिल्म एकेडमी से स्क्रीन राइटिंग की पढ़ाई पूरी की है। अगर उनकी नेट वर्थ की बात की जाए तो रोहन ठक्कर की नेटवर्थ कम से कम 8.5 करोड़ रुपये है। इसी के साथ वो काफी शार्ट फिल्मों के लिए भी काम कर चुके हैं। रोहन ठक्कर की खास बात यह है कि वो लाइमलाइट से दूर रहना पसंद करते हैं और उनका अकाउंट भी प्राइवेट है। अंशुला और रोहन की लव स्टोरी की शुरुआत 2022 में हुई थी और उसके बाद आए दिन दोनों सोशल मीडिया पर कुछ न कुछ पोस्ट करते रहते थे।

सुप्रीम कोर्ट ने मनी लॉन्ड्रिंग केस में दिया आदेश, जैकलीन को याचिका वापस लेने की मिली इजाजत क्या है मामला?

दिल्ली हाई कोर्ट के एक आदेश के खिलाफ जैकलीन फर्नांडिज ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। उन्होंने दिल्ली हाई कोर्ट के एक आदेश को चुनौती दी थी, क्योंकि इसके तहत उन पर मनी लॉन्ड्रिंग केस में आरोप तय किए जाने थे। इसी याचिका को वापस लेने की इजाजत अब सुप्रीम कोर्ट से जैकलीन फर्नांडिज को मिली है। आईएएनएस के मुताबिक याचिका में जैकलीन ने दिल्ली हाई कोर्ट के एक आदेश को चुनौती दी थी। दरअसल, दिल्ली हाई कोर्ट ने अपने आदेश में ठग सुकेश चंद्रशेखर से जुड़े 200 करोड़ रुपये के मनी लॉन्ड्रिंग मामले में एक फैसला सुनाया था। इसी केस से जैकलीन भी जुड़ी हैं। दिल्ली हाई कोर्ट ने ईडी की अभियोजन शिकायत को रद्द करने और ट्रायल कोर्ट द्वारा जैकलीन पर तय किए आरोप वाला फैसला बदलने से इंकार कर दिया था। लेकिन गुरुवार को सुनवाई के दौरान जैकलीन ने सुप्रीम कोर्ट से अपनी याचिका वापस लेने की अनुमति मांगी। शीर्ष अदालत ने उनके अनुरोध को स्वीकार कर लिया और उन्हें याचिका वापस लेने की इजाजत दे दी। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस बी.वी. नागरत्ना और जस्टिस जॉयमाल्य बागची की बेंच ने सुनवाई के दौरान जैकलीन को याचिका वापस लेने की अनुमति दी। जैकलीन ने पहले मनी लॉन्ड्रिंग मामले में दिल्ली की एक अदालत के सामने खुद को बेगुनाह बताया था। साथ ही मुकदमे का सामना करने की इच्छा जताई थी। 3 जून को पटियाला हाउस कोर्ट में पेश होने पर भी जैकलीन ने खुद पर लगाए गए आरोपों से इनकार किया। साथ ही मामले को मेरिट के आधार पर लड़ने का फैसला किया। ट्रायल कोर्ट ने कथित ठग चंद्रशेखर, उनकी पत्नी लीना मारिया पॉल और 14 अन्य लोगों पर भी मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप तय किए। इन सभी ने खुद को बेगुनाह बताया और मुकदमे की मांग की। यह मामला अभी 16 जुलाई को आगे की कार्यवाही के लिए ट्रायल कोर्ट में लिस्टेड है। यह अपडेट जैकलीन के इसी मामले में सरकारी गवाह बनने की अपनी अर्जी वापस लेने के कुछ हफ्ते बाद सामने आया। ईडी ने इस अर्जी का विरोध करते हुए कहा था कि जांच के दौरान जैकलीन का व्यवहार संतोषजनक नहीं था। एंटी–मनी लॉन्ड्रिंग एजेंसी का आरोप है कि जैकलीन को चंद्रशेखर के आपराधिक बैकग्राउंड के बारे में पता था। इसके बावजूद वह उसके संपर्क में बनी रहीं। जांच एजेंसी के मुताबिक चंद्रशेखर ने कथित मनी–लॉन्ड्रिंग गतिविधियों से हुई अपराध की कमाई का इस्तेमाल करके जैकलीन के लिए लग्जरी तोहफे, कीमती सामान और अन्य फायदे उपलब्ध कराए। ईडी ने भी जैकलीन पर चंद्रशेखर से लगभग 7 करोड़ रुपये के लग्जरी तोहफे लेने का आरोप लगाया है। हालांकि एक्ट्रेस का हमेशा से यही कहना रहा है कि उन्हें चंद्रेशखर की कथित आपराधिक गतिविधियों या उन तोहफों के लिए इस्तेमाल किए गए पैसे के स्रोत के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। यह मनी लॉन्ड्रिंग का मामला उन आरोपों से जुड़ा है जिनमें कहा गया है कि चंद्रशेखर ने रैनबैक्सी के पूर्व प्रमोटरों शिविंदर सिंह और मलविंदर सिंह की पत्नियों से लगभग 200 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी की थी।

शरीर की हर तरह की कमजोरी दूर करती है ये फिश, नॉन वेज के शौकीन है तों बनाएं डाइट का हिस्सा

अस्त–व्यस्त लाइफस्टाइल के चलते हमारी खाने की थाली से महत्वपूर्ण पोषक तत्त्व गायब हो जाते हैं। ऐसे में अपनी डाइट में आप मछली को शामिल कर सकते है। इसे खाने से आपके शरीर को एक साथ कई लाभ भी मिलेंगे। क्योंकि इसमें ओमेगा–3 फैटी एसिड, विटामिन डी, विटामिन बी 2 (राइबोफ्लिविन), कैल्शियम, फॉस्फोरस, आयरन, जिंक, आयोडीन, मैग्नीशियम और पोटैशियम जैसे गुण पाए जाते हैं। जो आपके शरीर ताकत बढ़ाने में मदद करते है। वहीं मछली को लेकर जाने–माने एक आयुर्वेदिक विशेषज्ञ का भी यही कहना है कि सैल्मन (रावस), टूना, ट्राउट, सार्डिन और मैकरेल (बांगड़ा) आदि फैटी फिश को सबसे हेल्दी माना जाता है। उन्होंने कहा कि मछली के अंदर हाई क्वालिटी प्रोटीन, आयोडीन, विटामिन डी और विभिन्न विटामिन व मिनरल्स होते हैं, जिनकी कमी अक्सर लोगों में देखी जाती है। यह आम इंसान की हर तरह की कमजोरी दूर करने में सक्षम है। आप मछली का सेवन नाश्ते में या दिन के किसी भी पहर कर सकते हैं, बस हर पदार्थ की तरह इसे संतुलित मात्रा में लें।

शरीर में भर जाएगा ओमेगा–3

अगर आप नाश्ते में या किसी भी समय मछली को अपनी डाइट का हिस्सा बनाते है तो आपके शरीर का विकास बहुत अच्छे से होगा। क्योंकि इस मछली ऐसे पोषक तत्व पाए जाते है जो सिर्फ कुछ चीजों में शामिल होते है। यह पोषक तत्व इंसान के दिमाग और आंखों के लिए बेहद जरूरी है। बता दें कि सैल्मन, सार्डिन, ट्राउट मछलियों में पर्याप्त ओमेगा–3 फैटी एसिड होता है और मरकरी भी कम होता है।

दिमागी कमजोरी होगी खत्म

मछली में मौजूद पोषण दिमाग की ताकत को बढ़ाने का काम करते है। इसलिए रोज नहीं तो कम से कम हफ्ते में एक बार तो इसका सेवन जरूरी करें। क्योंकि बचपन में अधिकतर दिमाग का विकास हो जाता है और उम्र बढ़ने के साथ इसका फंक्शन कमजोर पड़ने लगता है। इसलिए दोनों ही स्थितियों में दिमाग को मजबूत बनाने वाले फूड खाने चाहिए।

देती है हाई क्वालिटी प्रोटीन

मछली के अंदर काफी प्रोटीन होता है। यह आपकी मसल्स में ताकत भर देगा। पहलवान और जिम जाने वालों को हाई प्रोटीन फूड का सेवन करना चाहिए। जिससे दिनभर मांसपेशियों में जान भरी रहे।

विटामिन डी का बेस्ट फूड सोर्स

धूप के अलावा विटामिन डी बहुत कम फूड्स में मिलता है। जिसमें मछली बेस्ट सोर्स है। इस विटामिन की कमी से हड्डियां कमजोर हो जाती हैं और उनके टूटने का खतरा काफी ज्यादा हो जाता है।

कमजोर रोशनी करेगी तेज

आजकल छोटे–छोटे बच्चों को बड़े–बड़े चश्मे लग गए है। ऐसे में आंखों की रोशनी को बढ़ाने के लिए आप डाइट में मछली को शामिल करें।

दिल की कमजोरी का इलाज

इसके सेवन से हार्ट अटैक का खतरा कम हो जाता है। बता दें कि जब दिल की मसल्स कमजोर होने लगती है तो यह हार्ट अटैक का कारण बनती है। इस लिए हार्ट को सही रखने के लिए मछली जरूर खाए।

नस पर नस चढ़ जाए तो अपनाएं ये देसी उपाय, फौरन मिलेगा आराम

अक्सर कई लोगों के साथ होता है कभी–कभी उठते–बैठते या अंगड़ाई लेते समय शरीर के किसी भी हिस्से की नस चढ़ जाती है। जिससे पीड़ित को भयंकर दर्द, झुनझुनी और बेचौनी का सामना करना पड़ता है। यह दर्द इतना तेज होता है कि आपका चलना–फिरना तक मुश्किल हो जाता है। ऐसे में कुछ देसी उपाय अपनाकर इस दर्द से छुटकारा पाया जा सकता है।

नस चढ़ने के क्या हैं कारण

खराब लाइफस्टाइल के चलते कई बार सोते समय कुछ महिलाओं सहित अन्य लोगों के कंधे, गर्दन और हाथ–पैरों की नस चढ़ जाती है। ऐसा बॉडी में न्यूट्रिशन की कमी के कारण होता है। बता दें कि विटामिन सी शरीर में लचीलेपन को बनाए रखने में मदद करता है। यह ब्लड सेल्स को भी मजबूत बनाता है, जिसके कारण स्किन हेल्दी नजर आती है। विटामिन सी की कमी से ब्लड सेल्स कमजोर हो जाते हैं, जिसके कारण आसानी से नस एक के ऊपर एक चढ़ जाती है। नस चढ़ने से काफी तेज दर्द होता है।

जब भी आपको ऐसा महसूस हो कि आपकी नस चढ़ गई है तो उसी समय अपनी उंगली के नाखून के नीचे वाले भाग को जोर–जोर से दबाएं और तब तक दबाएं जब तक नस पर नस चढ़ने वाला दर्द शांत ना हो जाए। यह दर्द उस बिंदु को दबाने से सिर्फ 3 मिनट में ठीक हो सकती है और परिस्थिति सामान्य हो सकती है। इतना ही नहीं इस समस्या में आप एकदम अगर अपने पैर को झटके उससे भी आपको आराम मिलेगा। वहीं साथ में आप अपने ब्लड सरकुलेशन को बेहतर करने के लिए अपने हाथों से मसाज करें। ऐसा करने से आपकी परेशानी दूर होगी।

गर्म सिकाई करें

पैर की नस पर नस चढ़ जाए, तो आप गर्म पानी का सेक भी लगा सकते हैं। इसके लिए आप हीटिंग पैड को प्रभावित स्थान पर लगाएं और थोड़ी देर के लिए ऐसे ही रख दें। 1–2 मिनट में ही आपको दर्द से आराम मिल जाएगा।

स्ट्रेचिंग करें

इसके लिए आप अपने हाथों से पैरों को स्ट्रेच कर सकते हैं या फिर पैर को झटक भी सकते हैं। अगर आपको अकसर ही नस पर नस चढ़ जाती है तो आपको रोजाना एक्सरसाइज करना बहुत जरूरी होता है। रेगुलर एक्सरसाइज करने से ब्लड सर्कुलेशन बेहतर रहता है और नस पर नस चढ़ने की समस्या से भी राहत मिलती है।

ब्लैक कॉफी पीने से दूर होते है एक नहीं अनेक रोग, जानिए कैसे

ब्लैक कॉफी में पर्याप्त मात्रा में कैफीन पाया जाता है। जोकि एंटी ऑक्सीडेंट से भरपूर होती है। इसके सेवन से शरीर कई तरह की गंभीर बीमारियों से दूर रहता है। बता दें कि इसमें मैग्ध्नीजियम, विटामिन बी3, मैग्नीज, पोटैशियम, विटामिन बी5, विटामिन बी2 मौजूद होते है। जो हमारे दिमाग ब्रेन को बेहतर तरीके से फंक्शन करने में मदद करती है। तो चलिए जानते है इसके सेवन से सेहत को होने वाले फायदे।

डिप्रेशन को करे दूर

ब्लैक कॉफी डिप्रेशन, चिंता, तनाव को दूर करने का काम करती है। क्योंकि इसमें मौजूद कैफीन आपके दिमाग और नर्वस सिस्टम दोनों को उत्तेजित रखता है। साथ ही शरीर में गर्मी को जनरेट कर बढ़ते वजन को कम करने में सहायक है। ब्लैक कॉफी का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह फिजिकल एक्टिविटी के दौरान आपकी बॉडी को एनर्जी देती है। कॉफी में कैफीन पाया जाता है, इसका इस्तेमाल वर्कआउट से पहले कुछ मात्रा में करने से एनर्जी मिलती है।

दिल को रखे हेल्दी

रोजाना एक से 2 कप ब्लैक कॉफी के सेवन से दिल का दौरा पड़ने की आशंका कम हो जाती है। इससे साथ ही ब्लैक कॉफी पीने से आपके शरीर के भीतर किसी भी किस्म के इन्फ्लेमेशन या सूजन में कमी आती है।

डायबिटीज रखे दूर

ब्लैक कॉफी डायबिटीज के खतरे को कम करने में मदद करती है। ब्लैक कॉफी शरीर में इंसुलिन के उत्पादन में मदद करती है जिससे डायबिटीज का खतरा कम हो जाता है।

लीवर के लिए फायदेमंद

लीवर हमारे शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग माना जाता है क्योंकि यह कई सारे कामों को अंजाम देता है। बता दें कि ब्लैक कॉफी लिवर कैंसर, हेपेटाइटिस, फैटी लीवर और एल्कोहलिक सिरोसिस जैसी बीमारियों से आपके लिवर को मुक्त कराती है।

आपको खुश रखती है

ब्लैक कॉफी पीना आपकी मूड को बेहतर करता है और आप उदासी से दूर होते हैं। ब्लैक कॉफी आपके दिमाग के उन हिस्सों को एक्टिवेट करती है जो अच्छे मूड के लिए जिम्मेदार होते हैं।

कॉफी रखता है एनर्जेटिक

कॉफी में पर्याप्त मात्रा में कैफीन की मात्रा पाई जाती है, जो आपको एनर्जेटिक और तरोताजा महसूस करान में मदद करता है। यह नर्वस सिस्टम को उत्तेजित करता है। जिससे आपका दिमाग तेजी से काम करता है। ऐसे में आप रोजाना ब्लैक कॉफी का सेवन करें।

मेमोरी बढ़ाने में कारगर

जैसे– जैसे उम्र बढ़ती है कई लोगों का दिमाग कमजोर हो जाता है। जिससे अल्जाइमर और पैर्किंसंस जैसी बीमारियों का खतरा उत्पन्न होने डर बना रहता है। ब्लैक कॉफी का सेवन आपको इन बीमारियों से निजात दिलाने में मददगार हो सकता है। यह आपकी मेमोरी और चीजों को पहचानने की क्षमता में वृद्धि करता है। ऐसे में आपको रोजाना ब्लैक कॉफी का सेवन करना चाहिए।

इस तरह बनाएं ब्लैक कॉफी

अगर आपका ब्लैक कॉफी पीने का मन है तो पहले पानी को अच्छे से उबालें और उसमें 1 चम्मच ब्लैक कॉफी मिक्स करें। लेकिन खाली पेट इसका सेवन न करें।

बाजुओं में लटक रही चर्बी से हैं परेशान? बिना जिम पा सकते हैं टोन्ड और स्लिम आर्म्स!

कई लोगों के लिए बाजुओं में जमा अतिरिक्त चर्बी आत्मविश्वास को भी प्रभावित करती है। स्लीवलेस कपड़े पहनने से झिझक महसूस होना या हाथों का भारी दिखना एक आम समस्या है, खासकर महिलाओं में। हालांकि, फिटनेस एक्सपर्ट्स का मानना है कि शरीर के किसी एक हिस्से की चर्बी को अलग से कम करना संभव नहीं होता। इसके लिए पूरे शरीर की फिटनेस और फैट लॉस पर काम करना जरूरी है। अच्छी बात यह है कि कुछ खास एक्सरसाइज बाजुओं की मांसपेशियों को मजबूत बनाकर उन्हें अधिक टोंड और शेप में लाने में मदद कर सकती हैं। नियमित व्यायाम और संतुलित खानपान के साथ कुछ ही हफ्तों में फर्क महसूस किया जा सकता है।

आर्म सर्कल्सः आसान लेकिन असरदार एक्सरसाइज

अगर आप घर पर ही शुरुआत करना चाहते हैं तो आर्म सर्कल्स एक बेहतरीन विकल्प है। इसे करने के लिए सीधे खड़े हो जाएं और दोनों हाथों को कंधों की सीध में फैलाएं। अब हाथों को छोटे–छोटे गोल घुमाव में आगे की दिशा में घुमाएं और फिर पीछे की ओर घुमाना शुरू करें। यह एक्सरसाइज कंधों और बाजुओं की मांसपेशियों को सक्रिय करती है। शुरुआत में बिना वजन के करें और बाद में हल्के डंबल्स का इस्तेमाल भी किया जा सकता है।

ऑपोजिट आर्म एंड लेग लिफ्ट से बढ़ाएं ताकत और बैलेंस

यह एक्सरसाइज केवल हाथों के लिए ही नहीं बल्कि पूरे शरीर के संतुलन और कोर स्ट्रेंथ के लिए भी फायदेमंद मानी जाती है। इसमें एक हाथ को सामने और विपरीत पैर को पीछे की ओर सीधा फैलाना होता है। कुछ सेकंड तक इसी स्थिति में रुकने के बाद दूसरी तरफ यही प्रक्रिया दोहराई जाती है। नियमित अभ्यास से बाजुओं की मांसपेशियां मजबूत होती हैं और शरीर का संतुलन बेहतर होता है।

चेयर डिप्सः बाजुओं के पिछले हिस्से पर करती है काम

अक्सर बाजुओं के पीछे जमा चर्बी सबसे ज्यादा परेशान करती है। इस हिस्से को टोन करने के लिए चेयर डिप्स बेहद प्रभावी मानी जाती है। दो मजबूत कुर्सियों या किसी स्थिर सतह की मदद से इस एक्सरसाइज को किया जा सकता है। हाथों के सहारे शरीर को ऊपर उठाकर धीरे–धीरे नीचे लाएं और फिर ऊपर उठें। इससे ट्राइसेप्स मसल्स मजबूत होती हैं और हाथ अधिक शेप में दिखाई देने लगते हैं।

काउंटर पुश–अप्स से मजबूत बनेंगे हाथ और कंधे

अगर सामान्य पुश–अप्स करना मुश्किल लगता है तो काउंटर पुश–अप्स से शुरुआत की जा सकती है। किसी मजबूत टेबल या किचन काउंटर के सहारे यह एक्सरसाइज आसानी से की जा सकती है। यह न सिर्फ बाजुओं बल्कि कंधों, छाती और ऊपरी शरीर की मांसपेशियों को भी मजबूत बनाती है। नियमित अभ्यास से हाथों की ताकत बढ़ती है और अतिरिक्त फैट कम करने में मदद मिलती है।

सिर्फ एक्सरसाइज नहीं, खानपान भी है जरूरी

विशेषज्ञों का कहना है कि केवल एक्सरसाइज से ही अच्छे परिणाम नहीं मिलते। यदि आप बाजुओं की चर्बी कम करना चाहते हैं तो संतुलित आहार, पर्याप्त पानी और अच्छी नींद को भी अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना होगा। जंक फूड, ज्यादा चीनी और तली–भुनी चीजों से दूरी बनाकर तथा प्रोटीन और फाइबर युक्त भोजन अपनाकर फैट लॉस की प्रक्रिया को तेज किया जा सकता है।

नियमितता ही है सफलता की कुंजी

फिटनेस एक्सपर्ट्स के अनुसार, यदि इन एक्सरसाइज को नियमित रूप से किया जाए और साथ में हेल्दी लाइफस्टाइल अपनाई जाए, तो लगभग 8 से 12 सप्ताह के भीतर बाजुओं में सकारात्मक बदलाव दिखाई देने लगते हैं। धैर्य और निरंतरता के साथ किया गया प्रयास न केवल बाजुओं को स्लिम और टोन्ड बनाता है, बल्कि पूरे शरीर की फिटनेस को भी बेहतर बनाने में मदद करता है।

संक्षिप्त

फीफा विश्वकप के बीच नेपाल फुटबॉल एसोसिएशन पर गिरी गाज! क्यों हुए निलंबित? चौंका देगी वजह

लॉजेन,एजेंसी। इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ एसोसिएशन फुटबॉल (फीफा) ने तीसरे पक्ष के दखल से जुड़े फीफा नियमों के उल्लंघन के कारण ऑल नेपाल फुटबॉल एसोसिएशन (एएनएफए) को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। यह फैसला नेपाली फुटबॉल के गवर्नेंस को लेकर लंबे समय से चल रहे विवाद के बाद आया है। इससे पहले, नेपाल की नेशनल स्पोर्ट्स काउंसिल ने एएनएफए को तीन महीने के लिए निलंबित कर दिया था। हालांकि बाद में उस फैसले को वापस ले लिया गया था। फीफा ने अपने बयान में कहा कि काउंसिल के ब्यूरो ने फीफा नियमों के आर्टिकल 14 पैराग्राफ 1(आई) और 3 के तहत तीसरे पक्ष के दखल से जुड़े नियमों के उल्लंघन के कारण ऑल नेपाल फुटबॉल एसोसिएशन (एएनएफए) को तत्काल प्रभाव से निलंबित करने का फैसला किया है। फीफा के सर्कुलर के मुताबिक, 24 जून 2026 से एएनएफए ने फीफा नियमों के आर्टिकल 13 में दिए गए सभी सदस्यता अधिकार अगले आदेश तक खो दिए हैं। इसके चलते अब एएनएफए के प्रतिनिधि और क्लब टीमें तब तक किसी भी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में हिस्सा नहीं ले सकेंगी, जब तक उनका निलंबन वापस नहीं लिया जाता। इस निलंबन का मतलब है कि नेपाल की राष्ट्रीय टीमें और क्लब अब फीफा और एशियन फुटबॉल कन्फेडरेशन (एएफसी) द्वारा आयोजित किसी भी प्रतियोगिता में हिस्सा नहीं ले सकेंगे। इसके साथ ही ऑल नेपाल फुटबॉल एसोसिएशन (एएनएफए), उसके सदस्य संगठनों और अधिकारियों को फीफा औरएएफसी की वित्तीय सहायता भी नहीं मिलेगी। फीफा ने यह भी स्पष्ट किया है कि निलंबन के दौरान एएनएफए और इसके किसी भी सदस्य या अधिकारी को फीफा और एएफसी के किसी भी विकास कार्यक्रम, कोर्स या प्रशिक्षण में भाग लेने की अनुमति नहीं होगी। इसके अलावा, सभी संबंधित पक्षों को यह भी निर्देश दिया गया है कि जब तक एएनएफए पर निलंबन लागू है, तब तक उनके साथ या उनकी टीमों के साथ किसी भी प्रकार का खेल संबंध (स्पोर्टिंग कॉन्टैक्ट) न रखा जाए।फीफा ने आगे कहा कि काउंसिल का ब्यूरो या फीफा काउंसिल अगली फीफा कांग्रेस से पहले किसी भी समय इस निलंबन को हटाने का फैसला कर सकता है। यदि ऐसा होता है, तो इसकी जानकारी सभी संबंधित पक्षों को दी जाएगी। फीफा के नियमों के आर्टिकल 14 के अनुसार, जो मेंबर एसोसिएशन की जिम्मेदारियों से संबंधित है, किसी भी जिम्मेदारी के उल्लंघन पर कार्रवाई की जा सकती है, भले ही उसमें तीसरे पक्ष का प्रभाव शामिल हो। इसके तहत हर मेंबर एसोसिएशन अपने सदस्यों की गंभीर लापरवाही या जानबूझकर किए गए गलत कार्यों के लिए फीफा के प्रति पूरी तरह जिम्मेदार माना जाएगा।

इबोला प्रभावित देश से आने वालों को देना होगा सेहत का ब्योरा, सरकार ने शुरू किया एयर सुविधा पोर्टल

नई दिल्ली,एजेंसी। इबोला वायरस का प्रकोप मध्य और पूर्वी अफ्रीका तक सीमित है। हालांकि, फ्रांस भी अलर्ट मोड पर आ चुका है। इबोला से प्रभावित देशों से आने वाले यात्रियों को लेकर भारत अलर्ट हो गया। इबोला से प्रभावित देशों से आने वाले या वहां से गुजरने वाले यात्रियों के लिए एयर सुविधा पोर्टल एक्टिव है। यात्री उतरने से पहले जरूरी सेल्फ–डिक्लेरेशन फॉर्म (एसडीएफ) आसानी से ऑनलाइन जमा कर सकते हैं। इससे पहले पेपर–बेस्ड प्रक्रिया फॉलो की जा रही थी। सूत्रों के अनुसार, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा इबोला को अंतरराष्ट्रीय चिंता वाली सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातस्थिति (पीएचईआईसी) घोषित किए जाने के बाद से यह व्यवस्था लागू है। इसके तहत प्रवेश बिंदुओं (एयरपोर्ट, बंदरगाह आदि) पर स्वास्थ्य निगरानी को मजबूत करने के साथ–साथ यात्रियों की आवाजाही को सुगम बनाने के उपाय भी किए गए हैं। फ्रांस ने पांच ऐसे लोगों की पहचान की है और उन्हें आइसोलेट किया है जो इबोला वायरस से संक्रमित हो सकते हैं। ये लोग एक डॉक्टर के साथ फ्लाइट में सफर कर रहे थे, जिसका वायरस टेस्ट पॉजिटिव आया था। फ्रांस की स्वास्थ्य मंत्री स्टेफनी रिस्ट ने बुधवार (स्थानीय समय) को कहा कि डॉक्टर ने फ्रांस लौटने से पहले डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो में काम किया था। मंत्री के अनुसार, मरीज एक अनुभवी डॉक्टर है जो एक मिशन से लौटे हैं, जिन्हें पता नहीं था कि उन्हें वायरस हो गया है। जब वह प्लेन में बैठे, तो उनमें कोई लक्षण नहीं था। वह एक डॉक्टर है और विमान में उन्हें सिरदर्द हुआ, इसलिए उन्होंने अलर्ट जारी किया ताकि पेरिस पहुंचने पर उनका ध्यान रखा जा सके। जैसे ही उनकी फ्लाइट लैंड हुई, उन्हें हॉस्पिटल में आइसोलेशन में रखा गया। मंत्री ने आगे कहा कि वह 21 दिनों तक, जो कि इन्क्यूबेशन पीरियड का समय है, वहीं रहेंगे। यूरोपीय सेंटर फॉर डिजीज प्रिवेंशन एंड कंट्रोल का अनुमान है कि यूरोप में रहने वाले लोगों के लिए संक्रमण का खतरा बहुत कम है। इस बीच, डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो (डीआरसी) में इबोला के 1,118 कन्फर्म मामले सामने आए हैं, जिनमें 291 मौतें शामिल हैं। डीआरसी सरकार ने इस बीमारी के फैलने के बाद ताजा स्थिति को लेकर अपडेट में कहा है।

आकाश दीप ने शादी में धोनी–कोहली और रोहित को क्यों नहीं बुलाया? खुद बताई इसकी दिलचस्प वजह

वाराणसी,एजेंसी। भारतीय तेज गेंदबाज आकाश दीप ने हाल ही में वाराणसी में अक्षिता राज के साथ शादी की। शादी के बाद सोशल मीडिया पर साझा किए गए एक वीडियो में उनसे पूछा गया कि उन्होंने महेंद्र सिंह धोनी, विराट कोहली और रोहित शर्मा को शादी में क्यों नहीं बुलाया। इस पर आकाश दीप ने मजाकिया अंदाज में जवाब दिया, जिसने फैंस का ध्यान खींच लिया। उनका कहना था कि इन दिग्गज खिलाड़ियों की मौजूदगी से शादी समारोह में भारी भीड़ उमड़ सकती थी। भारतीय क्रिकेट टीम के तेज गेंदबाज आकाश दीप इन दिनों अपनी शादी को लेकर चर्चा में हैं। हाल ही में उन्होंने वाराणसी में अक्षिता राज के साथ सात फेरे लिए। शादी के बाद उन्होंने सोशल मीडिया पर समारोह की तस्वीरें और वीडियो साझा किए, जिन्हें फैंस ने खूब पसंद किया। इसी बीच शादी से जुड़ा एक वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें आकाश दीप से भारतीय क्रिकेट के तीन बड़े नामोंक्र महेंद्र सिंह धोनी, विराट कोहली और रोहित शर्मा को लेकर सवाल पूछा गया। शादी समारोह में शामिल एक मेहमान ने आकाश दीप से मजाकिया अंदाज में पूछा, भाई, आपने विराट कोहली, एमएस धोनी और रोहित शर्मा को अपनी शादी में नहीं बुलाया? इस सवाल का जवाब आकाश दीप ने भी हंसते हुए दिया और उनका जवाब सुनकर आसपास मौजूद लोग भी मुस्कुरा उठे। आकाश दीप ने कहा, भाई, यहां बनारस में शादी हो पाएगा? उनके इस जवाब ने साफ संकेत दिया कि अगर भारतीय क्रिकेट के ये तीन सबसे लोकप्रिय सितारे शादी में पहुंचते, तो उन्हें देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग जमा हो सकते थे। ऐसे में शादी समारोह को सामान्य तरीके से आयोजित करना मुश्किल हो जाता। आकाश दीप

का यह जवाब अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। क्रिकेट प्रशंसक उनके मजाकिया अंदाज को काफी पसंद कर रहे हैं और इस वीडियो पर तरह–तरह की प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। विराट कोहली, रोहित शर्मा और एमएस धोनी भारतीय क्रिकेट के सबसे लोकप्रिय खिलाड़ियों में शामिल हैं। ऐसे में जहां भी ये खिलाड़ी पहुंचते हैं, वहां बड़ी संख्या में प्रशंसक जुट जाते हैं। आकाश दीप ने अब तक भारत के लिए 10 टेस्ट मैच खेले हैं और 28 विकेट अपने नाम किए हैं। एक पारी में उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन छह विकेट पर 60 रन और एक मैच में 10 विकेट पर 112 रन रहा है। पिछले साल इंग्लैंड के खिलाफ एंडरसन–तेंदुलकर सीरीज में बर्मिंघम टेस्ट में 12 विकेट लेकर उन्होंने खास पहचान बनाई थी। हालांकि आईपीएल 2026 में कोलकाता नाइट राइडर्स का हिस्सा बनने के बावजूद वह चोट के कारण पूरे सीजन से बाहर रहे। पीठ के निचले हिस्से में स्ट्रेस इंजरी के चलते वह मैदान से दूर हैं और फिलहाल अपनी फिटनेस पर काम कर रहे हैं।

मां बनने के बाद भी जारी रहेगा करियर ? आईसीसी के नए नियम की सचिन तेंदुलकर ने की जमकर तारीफ

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने महिला क्रिकेटरों के लिए एक अहम पहल करते हुए गर्भावस्था के बाद खेल में वापसी को आसान बनाने के उद्देश्य से नया सिक्स–आर फ्रेमवर्क शुरू किया है। इस नीति के तहत खिलाड़ियों को मां बनने के बाद क्रिकेट में लौटने के लिए चरणबद्ध और व्यवस्थित सहायता प्रदान की जाएगी। आईसीसी का मानना है कि किसी महिला खिलाड़ी के लिए मां बनना उसके करियर का अंत नहीं होना चाहिए। इसी सोच के साथ तैयार किए गए इस फ्रेमवर्क को क्रिकेट जगत से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है।

आईसीसी की इस पहल से भारतीय क्रिकेट के दिग्गज सचिन तेंदुलकर भी काफी प्रभावित हुए। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर इस फैसले की तारीफ करते हुए लिखा, श आईसीसी की यह पहल शानदार है। खेलों में सशक्तिकरण का मतलब यह सुनिश्चित करना है कि खिलाड़ी के सफर के हर चरण को सही व्यवस्था और समर्थन मिले।श्सचिन ने आगे कहा, श्इन दोनों में से किसी एक को चुनने से लेकर दोनों काम एक साथ करने तक का यह बदलाव इस बात का प्रमाण है कि हम खेल को सही दिशा में आगे बढ़ा रहे हैं। यह दुनिया भर की महिला क्रिकेटरों के भविष्य के लिए बहुत बड़ा कदम है। आईसीसी की मेडिकल सलाहकार समिति की सदस्य डॉ. फिलिपा इंगे ने इस नीति के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा, श्यह नीति खिलाड़ियों को यह दिखाने के लिए बनाई गई है कि गर्भावस्था के बाद भी वे खेल में वापसी कर सकती हैं। बच्चा होना किसी खिलाड़ी के करियर का अंत नहीं है। हमारा उद्देश्य सदस्य देशों को यह सुविधा देना है कि वे अपनी खिलाड़ियों की वापसी में मदद कर सकें।

इंग्लैंड की अनुभवी बल्लेबाज हीदर नाइट ने इस पहल को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा, श्जो खिलाड़ी मां बनना चाहती हैं, उनके लिए इस तरह के दिशा–निर्देश बहुत जरूरी हैं। इससे उन्हें यह भरोसा मिलेगा कि वे मातृत्व और क्रिकेट दोनों को साथ लेकर आगे बढ़ सकती हैं। आयरलैंड की पूर्व खिलाड़ी इसोबेल जॉयस ने अपनी वापसी के अनुभव साझा करते हुए कहा, खेल में लौटते समय तीन पहलुओं पर ध्यान देना जरूरी

होता है, शारीरिक, मानसिक और व्यावहारिक। एक मां को छोटे बच्चे की देखभाल भी करनी होती है और हर खिलाड़ी का अनुभव अलग होता है। ऐसे में समर्थन मिलना बेहद महत्वपूर्ण है। वेस्टइंडीज की क्रिकेटर एफी फ्लेचर, जो खुद मां बनने के बाद क्रिकेट खेल रही हैं, ने कहा, श्हर खिलाड़ी का सफर अलग होता है। परिवार बसाने के बाद दोबारा खेल में लौट पाना सबसे अच्छी बातों में से एक है। आईसीसी का यह नया नियम महिला क्रिकेटरों को मातृत्व और पेशेवर करियर के बीच चुनाव करने की मजबूरी से बाहर निकालने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। इससे भविष्य में अधिक महिला खिलाड़ियों को परिवार और खेल दोनों के बीच बेहतर संतुलन बनाने में मदद मिल सकती है।

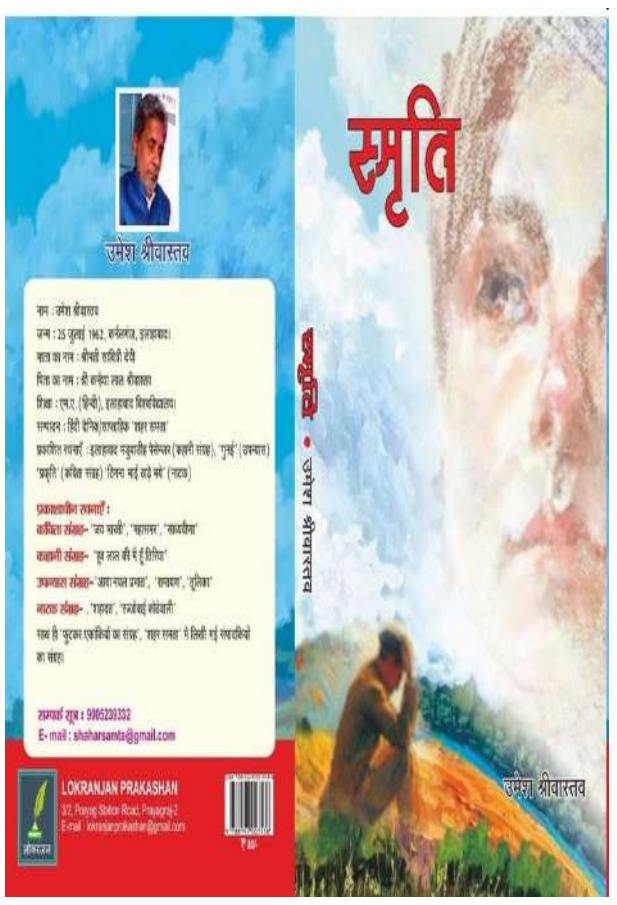

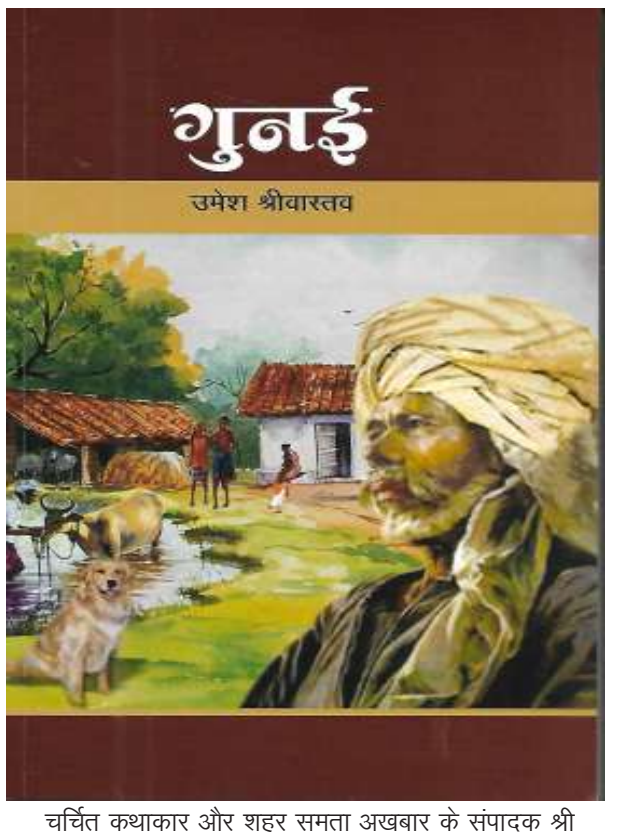

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

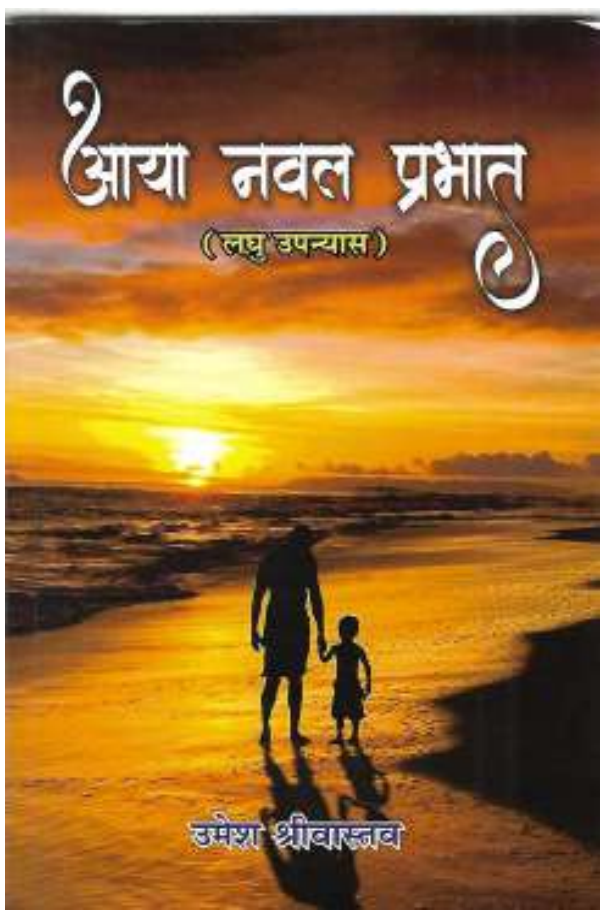

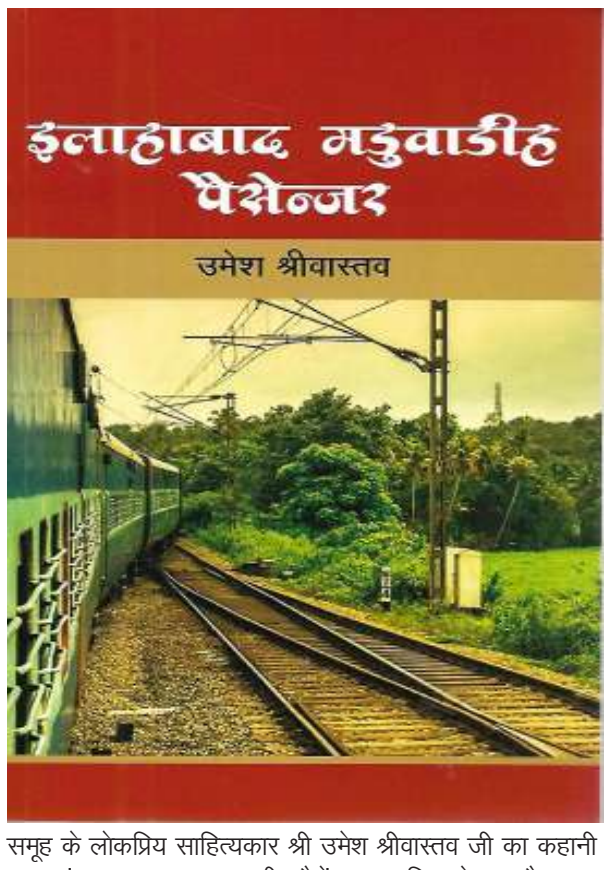

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

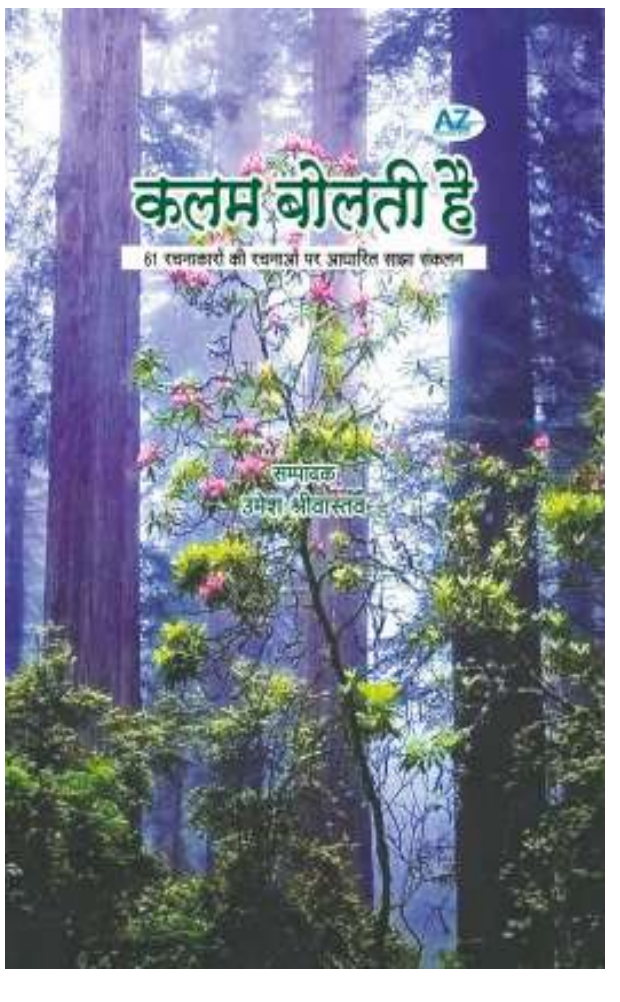

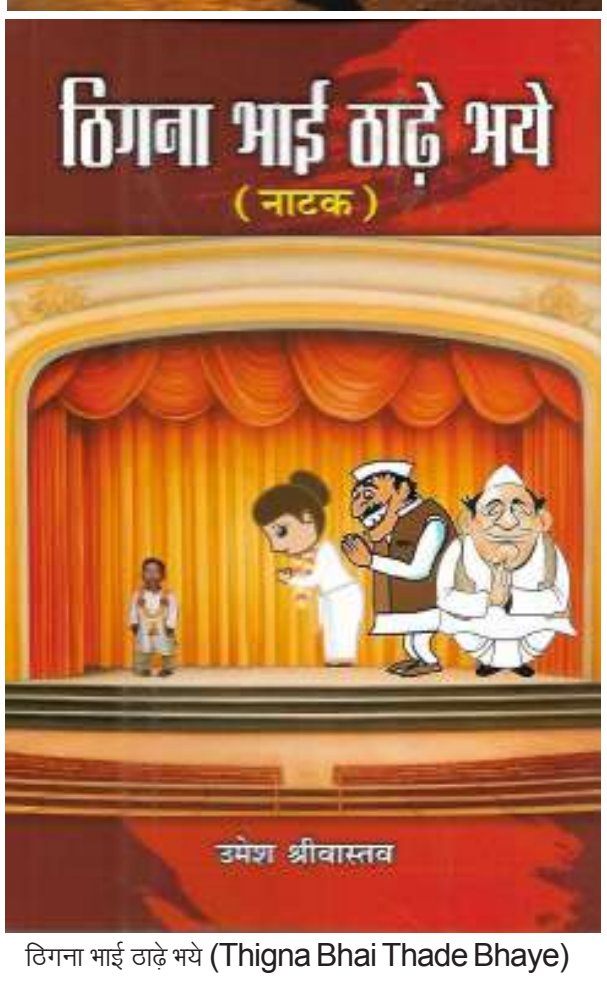

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

US: स्नैपचैट पर मुकदमा, बच्ची से दुष्कर्म के मामले में परिवार ने कंपनी को ठहराया जिम्मेदार, कोर्ट पहुंचा मामला

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के मिसूरी राज्य में एक दिल दहला देने वाला मामला सामने आया है। यहां एक बच्ची के माता–पिता ने सोशल मीडिया कंपनी श्स्नैपश और एक अपराधी के खिलाफ कोर्ट में केस किया है। यह मामला 12 साल की

बच्ची के साथ हुए दुष्कर्म से जुड़ा है। बच्ची की मुलाकात इस अपराधी से स्नैपचौट एप पर हुई थी। मुकदमे में कहा गया है कि स्नैपचौट ने अपने एप के खतरनाक फीचर्स को बंद करने से मना कर दिया है। कंपनी ने माता–पिता को उन खतरों के बारे में भी चेतावनी नहीं दी, जो इस एप के इस्तेमाल से बच्चों को हो सकते हैं। साल 2021 में जब बच्ची 11 साल की थी, तब उसने अपने माता–पिता को बताए बिना स्नैपचौट चलाना शुरू किया था। एप पर खाता खोलने के लिए उम्र कम से कम 13 साल होनी चाहिए। लेकिन बच्ची को याद नहीं कि उसने अपनी क्या उम्र भरी थी। मुकदमे के अनुसार, बच्चों को पता है कि वे उम्र की इस शर्त को आसानी से तोड़ सकते हैं। लगभग एक साल बाद, एप ने गैब्रियल जोएल वैलेन्टिन–रियोस नाम के एक आदमी को बच्ची का दोस्त बनने का सुझाव दिया। गैब्रियल एक वयस्क था और बच्ची से उसका कोई परिचय नहीं था। एप ने बच्ची को यह नहीं बताया कि अजनबियों से जुड़ना खतरनाक हो सकता है। दोस्ती होने के बाद, गैब्रियल ने बच्ची को गंदी तस्वीरें भेजना शुरू कर दिया। बच्ची यह सब नहीं चाहती थी, लेकिन स्नैपचौट की बनावट ऐसी थी कि उसके लिए इन चीजों से बचना नामुमकिन था। एप के श्स्नैप मैप्सश फीचर ने बच्ची की जानकारी के बिना उसका घर का पता गैब्रियल को दे दिया। गैब्रियल ने बच्ची को विश्वास दिलाया कि वह 17 साल का एक छात्र है, जबकि उसकी असली उम्र 25 साल थी। उसने बच्ची को मिलने के लिए बुलाया और उसके साथ दुष्कर्म किया। गैब्रियल ने अपना जुर्म स्वीकार कर लिया है और वह फिलहाल 18 साल की जेल काट रहा है। पीड़ित परिवार का आरोप है कि स्नैपचौट को पता था कि गैब्रियल के कई खाते थे, फिर भी उसे रोका नहीं गया। इस घटना के बाद बच्ची मानसिक बीमारियों से जूझ रही है। वकील मैथ्यू बर्गमैन ने कहा कि स्नैपचौट के डिजाइन ने अपराधी के लिए बच्चे तक पहुंचना और उसे फंसाना आसान बना दिया।श्स्नैपचौट पर पहले भी ऐसे कई मुकदमे हो चुके हैं। न्यू मेक्सिको और वरमोंट जैसे राज्यों में भी कंपनी पर बच्चों की सुरक्षा को लेकर गंभीर आरोप लगे हैं। पिछले साल एक जज ने इस केस को खत्म करने की कंपनी की मांग ठुकरा दी थी। परिवार अब कंपनी से हर्जाने और बच्चों की सुरक्षा के लिए ठोस कदम उठाने की मांग कर रहा है। फिलहाल कंपनी ने इसपर कोई प्रतिक्रिया नही दी है।

वेनेजुएला के बाद अब जापान में आया 6.9 तीव्रता का शक्तिशाली भूकंप, टोक्यो तक महसूस हुए झटके

एजेंसी/वेनेजुएला में भारी तबाही मचाने के बाद अब जापान के उत्तरी हिस्से में भी धरती कांपी है। गुरुवार को जापान में 6.9 तीव्रता का शक्तिशाली भूकंप आया। जापान की

मौसम एजेंसी ने बताया कि इसके झटके सैकड़ों किलोमीटर दूर राजधानी टोक्यो तक महसूस किए गए। राहत की बात यह है कि अधिकारियों ने किसी की जान जाने की खबर नहीं दी है। प्रशासन ने सुनामी की कोई चेतावनी भी जारी नहीं की है। शिंकानसेन में रोकी बुलेट ट्रेन सेवा मौसम विभाग के अनुसार, भूकंप का केंद्र होंशू द्वीप के इवाते प्रांत के पास जमीन से 50 किलोमीटर नीचे था। अभी तक किसी बड़े नुकसान की सूचना नहीं मिली है, लेकिन सुरक्षा के लिहाज से इवाते प्रांत में शिंकानसेन बुलेट ट्रेन सेवाओं को रोक दिया गया। पड़ोसी ओमोरी प्रांत के हाशिकामी शहर में झटके सबसे ज्यादा तेज थे। वहां की एक महिला ने बताया कि इन झटकों से उनके घर में एक फोटो फ्रेम भी गिर गया, बाकी सुरक्षित है। सार्वजनिक प्रसारक एनएचके के फुटेज में हाचिनोहे शहर में यातायात सामान्य दिखा और ट्रैफिक लाइटें भी सही से काम कर रही थीं। अब तक किसी के हताहत होने की खबर नहीं

सरकारी प्रवक्ता मिनोरू किहारा ने कहा कि फिलहाल किसी के हताहत होने की जानकारी नहीं है। प्रशासन नुकसान का आकलन कर रहा है और स्थिति पर नजर रखे हुए है। होक्काइडो द्वीप पर स्थित तोमारी परमाणु संयंत्र के पास रेडिएशन की जांच की गई, जहां सब कुछ सामान्य मिला है। ओमोरी में भूकंप की तीव्रता जापान के सात–स्तरीय पैमाने पर 'अपर सिक्स' दर्ज की गई। इस स्तर पर लोग बिना सहारे के खड़े नहीं रह पाते और गिर सकते हैं।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर. 9190052 39332
.919450482227

भारत समेत दुनिया के कई देश झेल चुके हैं आपदा, बीते 90 वर्षों में 5.64 लाख लोगों की मौत

एजेंसी/वेनेजुएला, बुधवार शाम दो शक्तिशाली भूकंप के झटकों से दहल गया। यूएस जियोलॉजिकल सर्वे के अनुसार, भूकंप के पहले झटके की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 7.1 रही, इसके 39 सेकेंड बाद ही दूसरा झटका लगा, जिसकी तीव्रता रिक्टर स्केल पर 7.5 रही। भूकंप का केंद्र देश के कैरेबियाई तट पर स्थित मोरोन शहर के पश्चिम में और कराकास से लगभग 168 किलोमीटर दूर था। भूकंप की गहराई 13 किलोमीटर दर्ज की गई। भूकंप में हुई जान–माल के नुकसान की अभी आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है, लेकिन आशंका है कि इन भूकंप के झटकों से वेनेजुएला में जिस तरह की तबाही दिख रही है, उसमें हजारों लोगों की मौत की आशंका है। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि मृतकों का आंकड़ा 10 हजार तक भी जा सकता है। सूनामी का अलर्ट भी जारी किया गया है।

भूकंप से वेनेजुएला में हुई तबाही कोई पहली घटना है, इससे पहले भी कई बार प्रकृति ने इसी तरह से इंसानों को डराया है। तो आइए जानते हैं कि वो कौन से बड़े भूकंप हैं, जिनमें हजारों लोगों की मौत हुई और भारी तबाही हुई। 470 साल पहले कौन सा भूकंप, कितनी मौतें? इतिहास में दर्ज आंकड़ों के अनुसार, दुनिया का सबसे घातक भूकंप साल 1556 में चीन के शानक्सी में आया था, जिसमें अनुमान के अनुसार करीब आठ लाख से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी। हालांकि इस भूकंप की तीव्रता कितनी थी, इसका सटीक दस्तावेजीकरण नहीं है। इसके चलते साल 2004 में हिंद महासागर में आया भूकंप सबसे घातक माना जाता है। बीते कुछ वर्षों में ताइवान के भूकंप की अधिक चर्चा क्यों? ताइवान में भी भूकंप के कारण हजारों लोग जान गंवा चुके हैं। बीते कुछ वर्षों में ताइवान की चर्चा इसलिए भी अधिक हुई क्योंकि 2024 में आए भूकंप के झटकों ने करीब सात दशक पुराने जख्मों को हरा कर दिया। 1935 और 1999 के भूकंपों को मिलाकर ताइवान में 5600 से अधिक मौतें हुई थीं। साल 2020 के बाद आए सबसे भयानक भूकंपों की बात करें तो तुर्किये और सीरिया में लगे झटके के बाद 60 हजार से अधिक लोगों को जान गंवानी पड़ी थी। 2004 में हिंद महासागर में आया भूकंप कितना खतरनाक? करीब 22 साल पहले 2004 में आए हिंद महासागर वाले भूकंप की रिक्टर स्केल पर तीव्रता 9.1 रही थी और इससे आई सुनामी के परिणामस्वरूप करीब ढाई लाख लोगों की मौत हुई थी। इस सुनामी से इंडोनेशिया, भारत, श्रीलंका और थाईलैंड में लोग सबसे ज्यादा प्रभावित हुए थे। इस भूकंप के चलते सुमात्रा के तट से 150 मील दूर समुद्र तल में एक जोरदार विस्फोट हुआ, जिससे इतनी ऊर्जा निकली जो अनुमानतः 23,000 हिरोशिमा बमों के बराबर थी। 470 साल पहले 1556 में आए भूकंप के बाद ऐसी प्राकृतिक आपदाओं के कई रिकॉर्ड्स बताते हैं कि दुनियाभर में अब तक लाखों लोग जान गंवा चुके हैं। 12 जनवरी 2010 को हैती की राजधानी पोर्ट ओ प्रिंस में 7.0 तीव्रता का भूकंप आया था, जिसमें तकरीबन 1,00,000 से लेकर 1,60,000 तक लोगों की मौत हुई थी। हालांकि इसके आधिकारिक आंकड़े अलग हैं। साल 2005 का कश्मीर भूकंप 8 अक्तूबर 2005 को भारत और पाकिस्तान के सीमावर्ती क्षेत्रों में 7.6 तीव्रता का भूकंप आया था, जिसमें पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत और जम्मू कश्मीर के कुछ हिस्से प्रभावित हुए थे। इसका असर अफगानिस्तान, ताजिकिस्तान और चीन के शिनजियांग प्रांत तक महसूस किया गया था। इस भूकंप में 86 हजार लोगों की मौत हुई थी। इससे व्यापक भूस्खलन हुआ और बुनियादी ढांचे को भारी नुकसान पहुंचा, जबकि लाखों लोग बेघर हो गए। 2023 तुर्किए–सीरिया भूकंप 6 फरवरी, 2023 को तुर्किए और सीरिया में 7.8 तीव्रता का भूकंप आया, जिसके बाद रिक्टर स्केल पर 7.5 तीव्रता का एक और झटका महसूस किया गया। यह भूकंप विशेष रूप से विनाशकारी था क्योंकि यह कड़ाके की ठंड के मौसम में आया था और अब इसे आधुनिक तुर्किए इतिहास की सबसे भीषण आपदा माना जाता है। दोनों देशों में मरने वालों की कुल संख्या 59,000 होने का अनुमान है। 11 मार्च 2011 की बात है। जापान में भूकंप के तेज झटकों के बाद आई सुनामी ने पूरे देश को बर्बादी की कगार पर पहुंचा दिया था। इसे फुकुशिमा भूकंप के नाम से भी जाना जाता है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, इस दौरान 18 हजार लोगों की मौत हुई थी। हालांकि, कई अन्य रिपोर्ट्स बताती हैं कि इसमें एक लाख से ज्यादा लोगों की जान गई थी। इस भूकंप की तीव्रता 9 मापी गई थी। सुनामी की वजह से जापान के तटीय इलाकों में बनीं तीन लाख से ज्यादा इमारतें बह गईं थीं। नेपाल में 2015 में आए भूकंप में 10 हजार लोगों की हुई थी मौत

25 अप्रैल 2015 को नेपाल में 8.1 तीव्रता का भूकंप आया था। इसमें 10 हजार से ज्यादा लोग मारे गए थे, जबकि 23 हजार से ज्यादा लोग घायल हुए थे। इस तबाही का खौफ आज भी नेपाल के लोगों में देखने को मिलता है। भूकंप के झटके का असर भारत, चीन, बांग्लादेश, पाकिस्तान तक महसूस हुआ था। भारत के कच्छ भुज में 26 जनवरी 2001 को आए भूकंप ने काफी तबाही मचाई थी। इस भूकंप की तीव्रता 7.7 थी। इसने गुजरात में भयंकर तबाही मचाई थी। कच्छ और भुज में 30 हजार से ज्यादा लोग मारे गए थे। वहीं डेढ़ लाख से ज्यादा लोग घायल हुए थे। भूकंप के चलते पूरे गुजरात में चार लाख से ज्यादा घर ढह गए थे। इसका असर पाकिस्तान में भी देखने को मिला था। क्वेटा में आए भूकंप ने 60 हजार लोगों की जान ले ली थी ये बात 31 मई 1935 की है। तब भारत का विभाजन नहीं हुआ था। उस दौरान बलूचिस्तान के क्वेटा शहर में आए भूकंप ने भारी तबाही मचाई थी। इसकी तीव्रता 7.7 मापी गई थी। इस दौरान करीब 60 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो गई थी, जबकि दो लाख से ज्यादा लोग घायल हो गए थे। भूकंप के चलते तीन लाख से ज्यादा मकान जमींदोज हो गए थे। रूस के कामचटका में आया विनाशकारी तूफान 2010 में चिली में हुई भीषण तबाही चिली में साल 1960 में इतिहास का सबसे शक्तिशाली भूकंप आया था, जिसकी रिक्टर स्केल पर तीव्रता 9.5 मापी गई थी। इसके बाद साल 2010 में भी चिली में एक घातक भूकंप आया था, जिसकी तीव्रता 8.8 थी। हालांकि इस भूकंप में ज्यादा लोगों की मौत नहीं हुई थी। अलास्का का भूकंप 27 मार्च 1964 को अमेरिका के अलास्का में आया 9.2 तीव्रता का भूकंप भी बेहद घातक था। करीब साढ़े चार मिनट तक इस भूकंप के झटके महसूस हुए थे। इसे अमेरिका के इतिहास का सबसे घातक भूकंप माना जाता है। हालांकि कम आबादी के चलते उस वक्त इस भूकंप में 130 लोगों की ही मौत हुई थी। इनके अलावा साल 2005 में इंडोनेशिया का भूकंप भी घातक माना जाता है, जिसकी तीव्रता रिक्टर स्केल पर 8.6 थी, लेकिन गनीमत रही इस भूकंप से जान–माल का भारी नुकसान नहीं हुआ। इस भूकंप में 1300 लोगों की मौत हुई थी।

क्या न्याय विभाग के काम में हस्तक्षेप कर रहे ट्रंप?

वॉशिंगटन, एजेंसी। अदालत में दाखिल दस्तावेज से खुलासा हुआ है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मनोरंजन क्षेत्र की दिग्गज कंपनी लाइव नेशन और उसकी सहायक टिकटिंग कंपनी टिकटमास्टर के खिलाफ चल रहे लंबे समय से लंबित एंटीट्रस्ट (प्रतिस्पर्धा–विरोधी) मुकदमे के अचानक निपटारे से कुछ सप्ताह पहले कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी से व्यक्तिगत रूप से बातचीत की थी। लाइव नेशन के वकीलों ने सोमवार को अदालत को बताया कि ट्रंप और कंपनी के सीईओ माइकल रैपिनो ने फरवरी में एंटीट्रस्ट मुकदमे को लेकर बातचीत की थी, हालांकि किसी संभावित समझौते की ठोस शर्तों पर चर्चा नहीं हुई थी। लाइव नेशन, लाइव इवेंट का आयोजन करने वाली मशहूर कंपनी है। यह विश्वभर में हर साल हजारों संगीत कार्यक्रमों का आयोजन करती है, जिसमें करोड़ों लोग शामिल होते हैं। कंपनी पर टिकटों की बिक्री और उनकी कीमत तय करने में एकाधिकार बनाने का आरोप है, जिसे लेकर कंपनी के खिलाफ अमेरिका के कई राज्यों ने मुकदमा दायर किया था। इसी मुकदमे में अब समझौता हो गया है, जिसे लेकर आरोप लग रहे हैं कि ट्रंप ने इसमें दखल दिया है, जिससे कंपनी सख्त कार्रवाई से बच गई है। कई राज्य समझौते का विरोध कर रहे वकीलों ने यह भी बताया कि फरवरी और मार्च के दौरान कंपनी तथा न्याय विभाग के बीच हुई कई आमने–सामने की बैठकों, वीडियो कॉन्फ्रेंस, टेलीफोन कॉल और लिखित संवादों में व्हाइट हाउस के वकील भी शामिल थे। मार्च में मुकदमे की सुनवाई शुरू होने के कुछ ही दिनों बाद न्याय विभाग ने समझौते की घोषणा कर दी थी। हालांकि अधिकांश राज्यों ने इस समझौते का विरोध किया था। उनका कहना था कि यह समझौता टिकटमास्टर के जरिए कॉन्सर्ट स्थलों और लाइव कार्यक्रमों की टिकट बिक्री पर कंपनी लाइव नेशन के वर्चस्व को सीमित करने के लिए काफी नहीं है। जूरी ने निष्कर्ष निकाला कि कंपनी एकाधिकार की स्थिति में थी, जिससे कॉन्सर्ट दर्शकों और खेल प्रेमियों को नुकसान पहुंचा। हालांकि इसके बावजूद भी समझौता होने को लेकर गंभीर सवाल उठ रहे हैं। व्हाइट हाउस ने इस पर टिप्पणी करने से इनकार कर दिया और संबंधित सवालों को न्याय विभाग के पास भेज दिया। वहीं न्याय विभाग ने भी तुरंत कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। न्याय विभाग की स्वतंत्रता पर उठे सवाल यह खुलासा ऐसे समय में हुआ है जब न्याय विभाग की स्वतंत्रता को लेकर सवाल उठ रहे हैं और आलोचकों का कहना है कि व्हाइट हाउस तथा राष्ट्रपति की ओर से हस्तक्षेप के कारण उसकी स्वायत्तता प्रभावित हो सकती है। गौरतलब है कि न्याय विभाग और दर्जनों राज्यों ने मिलकर ही लाइव नेशन के खिलाफ यह एंटीट्रस्ट मुकदमा दायर किया था। न्यूयॉर्क में जूरी ने पाया कि टिकटमास्टर की प्रतिस्पर्धा–विरोधी गतिविधियों के कारण 22 राज्यों में लोगों को प्रति टिकट औसतन 1.72 अमेरिकी डॉलर अतिरिक्त भुगतान करना पड़ा। अदालत कंपनियों को यह राशि उपभोक्ताओं को लौटाने का आदेश दे सकती है।

'होर्मुज में शुल्क मंजूर नहीं': ट्रंप की धमकी पर ईरान का जवाब- US का दखल रहने तक क्षेत्र में नहीं आएगी शांति

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को (स्थानीय समयानुसार) कहा कि अगर ईरान के साथ होने वाले किसी समझौते में होर्मुज जलडमरूमध्य में जहाजरानी या समुद्री गतिविधियों पर किसी भी तरह का शुल्क शामिल हुआ, तो यह उनके लिए श्अस्वीकार्यश होगा। ट्रंप ने नाटो महासचिव मार्क रूटे के साथ पत्रकारों से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने कहा कि ईरान के साथ चल रहे संघर्ष में अमेरिका अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। जब उनसे पूछा गया कि यदि अंतिम ईरान समझौते में जहाजरानी पर किसी तरह का शुल्क शामिल हुआ तो क्या वह उसे रोक देंगे, इस पर ट्रंप ने कहा, हां, यह मेरे लिए अस्वीकार्य होगा, क्योंकि दुनिया में कई अन्य जलडमरूमध्य भी हैं। अगर आप उनके लिए ऐसा करते हैं, तो फिर आपको दूसरों के लिए भी ऐसा करना होगा। दूसरे जलडमरूमध्य भी हैं और मैं वहां भी इसकी अनुमति नहीं दूंगा। हां, यह पूरी स्थिति को बदल देने वाला कदम होगा। डेमोक्रेट्स को बताया श्डमोक्रेटश ट्रंप ने आगे कहा कि डेमोक्रेटिक पार्टी युद्ध हारना चाहती है। उन्होंने कहा, ईरान के साथ हमारी बातचीत बहुत अच्छी चल रही है। हम एक बेहद अहम मुद्दे के बीच में हैं, जिसे हम किसी भी तरह हासिल कर लेते।

'परमाणु हथियार हासिल करने के बेहद करीब था ईरान', ट्रंप के साथ बातचीत में क्या-क्या बोले नाटो प्रमुख?

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ एक बैठक में उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) महासचिव मार्क रूटे ने ईरान को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि ईरान की परमाणु क्षमता को लेकर जो कदम उठाए जा रहे हैं, वे बहुत अहम हैं। उनके मुताबिक, ईरान लगभग परमाणु क्षमता हासिल करने के बहुत करीब था, जो क्षेत्र और पूरी दुनिया के लिए बड़ा खतरा बन सकता था। रुटे ने क्या कहा? मार्क रूटे ने कहा कि जी–7 के सभी नेताओं ने इस बात की सराहना की है कि ईरान की परमाणु क्षमता को कमजोर किया गया है। उन्होंने यह भी बताया कि छह हफ्तों के इस युद्ध के दौरान यूरोप के ठिकानों से करीब 4,000 से 5,000 अमेरिकी विमान उड़ान भरते रहे। उन्होंने कहा कि रोमानिया के बुखारेस्ट हवाई अड्डे को भी वाणिज्यिक उड़ानों के लिए बंद करना पड़ा, ताकि सैन्य अभियान जारी रह सके। रूटे ने कहा कि कुछ अलग–अलग घटनाएं हुई हैं जिनसे निराशा हुई है। लेकिन कुल मिलाकर यूरोपीय सहयोगी अमेरिका के साथ खड़े रहे हैं। यूरोपीय देशों के सहयोग के सवाल पर ट्रंप ने क्या कहा? इस पर जब राष्ट्रपति ट्रंप से पूछा गया कि क्या उनके यूरोपीय सहयोगियों ने उनके साथ ठीक व्यवहार नहीं किया, तो उन्होंने कहा कि अगर कोई और इस स्थिति में होता तो आज यह बैठक भी नहीं हो रही होती। ट्रंप ने कहा कि यह अच्छा होता, अगर सहयोगी देश मदद की इच्छा जताते। उन्होंने कहा कि अगर वे किसी से मदद मांगते तो वह शायद मदद करने का तरीका निकाल लेते। उन्होंने कहा कि वह इटली, ब्रिटेन, जर्मनी और फ्रांस से निराश थे। स्पेन को उन्होंने बहुत खराब स्थिति बताया। हालांकि, उन्होंने नाटो महासचिव मार्क रूटे के प्रति सम्मान भी जताया और कहा कि वे आगे चर्चा करेंगे कि क्या हुआ था और आगे क्या होगा।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।